हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

सितम्बर, 2004 वर्ष 3 अंक 7

इल्म

इल्म (ज्ञान) अल्लाह (परमात्मा) के नाम से जुड़ा हो, नहीं तो वह इल्म नहीं। वक़्त की ज़रूरत है कि हम आने वाली नस्लों (वंशजों) को अल्लाह के नाम की हक़ीक़तों (वास्तविकताओं) से और उसकी सदाक़तों (सत्यों) से आशना करें।

(मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चैक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक नज़र में

ईमान बिलग़ैब	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	8
मुहम्मद बिन सीरीन की सत्यवादिता	डा० मु० इज्तिबा नदवी	10
निजामे कजा की स्थापना का महत्व	अनुवाद-ह़बीबुल्लाह आज़मी	12
वर्तमान युग की समस्याओं का हल	लियाक़त अ़ली ख़ां	16
सदाचरण	मो० हसन अन्सारी	19
नबवी इ़लाज (शहद और पेट के रोग)	गुफ़रान नदवी	19
आप की समस्याएं और उनका ह़ल	मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी	20
उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत ख़दीजा	आफ़रीन इद्रीस फ़ारूक़ी	22
इस्मे अअ़ज़म से दुआ़	अबू मर्गूब	26
सय्यिदुना ईसा (अ़०)	आसिफ अंज़ार नदवी	27
ह़क़ीकते मुसीबत और सूरते मुसीबत	इदारा	28
आज़ादी का आन्दोलन	सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी	29
मेंहदी	श्रीमती अस्मा हसन	31
हम्दे बारी तआ़ला	मौ० मुह़म्मद सानी ह़सनी	32
ज़ालिम ख़ुदा की मार का अब इन्तिज़ार कर	हैदर अ़ली नदवी	33
परेशानियों का इ़लाज	मो० हसन अंसारी	34
जो दिलों को फ़तह़ कर ले	मौ० सै० मुह़म्मदुल ह़सनी	35
इस्लामिक फ़िक़्ह अकाडमी का सेमिनार	इदारा	37
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

□□□

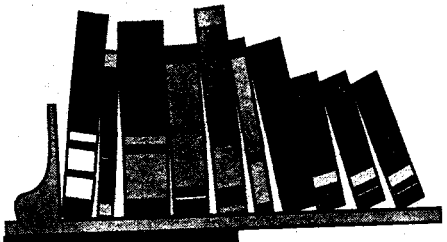

ईमान बिलग़ैब

(अनदेखी चीज़ों पर विश्वास)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बन्दे को मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा जिस के गिर्द को उस ने बरकत दी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का मुशाहदा कराए ह़क़ीक़त में वही है सब कुछ सुनने और देखने वाला।

यह क़ुर्आने मजीद की सूर–ए–बनी इस्राईल की पहली आयत का मफ़्हूम है। यह वही वाक़िआ है जिसे "मिअ़राज" कहते हैं। मिअ़राज ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुअ़जिज़ों में से एक बड़ा मुअ़जिज़ा है जो हिजरत से एक साल पहले मक्का मुकर्रमा में क़ियाम के दौरान पेश आया था।

क़ुर्आने मजीद में तो मस्जिदे ह़राम यानी बैतुल्लाह (मक्का मुकर्रमा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जाने का ज़िक्र है। यह ख़ुद बहुत ही ह़ैरत अंगेज़ (आश्चर्य जनक) बात है। हवाई जहाज़ से तो मुम्किन (सम्भव) है, लेकिन उस ज़माने की किसी भी सवारी से मुम्किन न था यह एक ख़र्क़ आ़दत (प्रकृति विरुद्ध) बात थी, मगर सह़ीह़ ह़दीसों से तो आप का बुराक़ सवारी पर जाना बैतुल मुक़द्दस में अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ नमाज़ पढ़ना फिर आसमानों के ऊपर जाना, आसमानों पर अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम से मुलाक़ात करना आसमानों के ऊपर अल्लाह तआ़ला से बातें करना अह़कामात (आदेश) लेना, पांच वक़्त की नमाज़ का ह़ुक्म लेना जन्नत व दोज़ख़ के बाज़ मनाज़िर (दृष्य) देखना वग़ैरह भी साबित है और यह सब रातों रात हो गया।

ज़ाहिर है यह तमाम ख़र्क आ़दत बातें अल्लाह की क़ुदरत का यक़ीन न रखने वालों के गले से उतरने वाली न थीं चुनांचि जब ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस वाक़िअ़े की इत्तिला अपने सह़ाबा को दी और यह ख़बर आ़म हुई तो ख़ूब ख़ूब इश्कालात ज़ाहिर किये गये और एअ़तिराज़ात हुए। कहते हैं कि कोई ह़ज़रत अबू बक्र के पास आया और कहा लो सुनो तुम्हारे रसूल क्या कहते हैं, उन का कहना है कि वह रातों रात बैतुल मुक़द्दस गये फिर वह आसमानों पर उड़ गये, वहां न जाने क्या क्या देखा, कहिये अब भी आप उनको सच्चा कहेंगे। ह़ज़रत अबू बक्र ने फ़रमाया अगर उन्होंने यह सब कहा है तो सच कहा है? हम को इस में कोई मुश्किल नहीं नज़र आती। जब वह हम को बताते हैं कि अभी जिब्रील अ़लैहिस्सलाम आये और यह यह आयतें सुना गये फिर जब हम उसे फ़ौरन मान लेते हैं तो इस के मानने में हमारे लिए क्या दुश्वारी ।

हमारे ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पहले कभी बैतुल मुक़द्दस नहीं गये थे चुनांचे जो लोग जा चुके थे और उसकी बनावट व ता़मीर से पूरी तरह़ वाक़िफ़ थे उन्होंने हमारे ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बैतुलमुक़द्दस की बनावट, खम्बों वग़ैरह की तफ़सील पर सुवालात किये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछी गयी तफ़सीलात बता दीं। लोग ह़ैरान रह गये। इस मिअ़राज की ख़बर से ईमान वालों के ईमान में इज़ाफ़ा हुआ जब कि बाज़ काफ़िर (इन्कार करने वाले) और भटक गये। "मिअ़राज" का तअ़ल्लुक़ ईमान बिलग़ैब से है जो दीन की बुन्यादी है।

इन्सानी मा़लूमात का ज़रीआ़ (साधन) उस के ह़वास के अअ़ज़ा (अंग) हैं वह आखों से देख

कर चीज़ों की बनावट व रंग, कानों से आवाज़, ज़बान से मज़ा, नाक से बू और पूरे जिस्म के किसी भी हिस्से से, किसी चीज़ को छूकर उसके गर्म, ठंडे, चिकने और खुर्दुरे होने का पता लगाता है।

अल्लाह तआला ने इन्सान को दिमाग़ दिया जो अक़्ल का सर्चश्मा (स्रोत) है वह अपनी अक़्ल से मदद लेकर मंतिक़, फ़लसफ़ा, रियाज़ी, जुग़राफिया, तारीख़ और साइंस और दूसरे उलूम (विद्याओं) को वजूद बख़्शता है। उसने इसी अक़्ल और अपने हवासे ख़म्सा से मदद लेते हुए इंजिन ईजाद (आविष्कार) किया, फिर इन्जिन से काम लेते हुए तरह तरह की गाड़ियां, सवारिया (कार, बस, रेल हवाई जहाज़ वग़ैरह) बना डालीं, रेडियो, टेलीफ़ोन, टेली प्रिन्टर, टेलीवीज़न, फ़ैक्स, कैमरा, इलेक्ट्रो स्टेट मशीन, इन्टरनेट, मोबाइल एक से एक हैरत अंगेज़ चीजें ईजाद कर डालीं एक्सरे मशीन, अल्ट्रा साउंड मशीन पाख़ाना, पेशाब, खून वग़ैरह का तजज़िया (विश्लेषण) आज कल के तअज्जुब खेज़ (आश्चर्य जनक) मरज़ों की पहचान और उनका इलाज, आंख की पुत्ली बदल कर नाबीना (अन्धे) को बीना (देखने वाला) कर देना, गुर्दे बदल देना, काम्याबी के साथ तअज्जुब खेज़ आप्रेशन कर डालना आदि यह सब अक़्ल के करिश्मे हैं।

लेकिन रूह जिसे जान कहो या जीव, आत्मा कहो या प्राण यह जानदार में कैसे आती है? कहां से आती है? कहां जाती है? कहां रहती है? अक़्ल वाले इस में अटकल तो लगाते हैं मगर सच्ची पक्की बात कोई नहीं बता पाता। किसी आले से किसी मशीन से रूह को निकाल कर कहीं महफ़ूज़ कर लें और ज़रूरत पर उसे कही इस्तिअमाल (प्रयोग) कर लें, इस से तमाम अक़्ल वाले साइन्स जानने वाले, डाक्टर, इंजीनियर सभी आजिज़ (असमर्थ) हैं। जब आदमी मर जाता है, रूह जिस्म छोड़ देती है फिर वह कहां जाती है? कहां रहती है? उसके साथ क्या मुआमला होता है? इन सुवालों के जवाबात किसी अक़्ल वाले के पास नहीं हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि रूह हवा जैसी कोई चीज़ है जानदार (जीवधारी) का जिस्म मां के रहिम (गर्भाशय) में जब एक मरहले (दशा) तक पहुंचता है तो उस में ख़ुद बख़ुद (स्वतः) जान आ जाती है। और जब जानदार मरता है तो उसकी रूह हवा में मिल जाती है और उसका जिस्म सड़ गल कर कीड़ों की खूराक बन कर मिट्टी में मिल जाता है। या आग में जल कर राख हो जाता है या मछली वगैरा की खूराक बन जाता है और बस। यह लोग ऐसी बातों को नहीं मानते जो न देखने में आ सके न तजरिबे में। चुनांचि यह लोग यह नहीं मानते कि इस दुन्या का कोई ख़ालिक़ (विधाता) है। ऐसे लोगों को दहरिया या नास्तिक कहा जाता है। ऐसे लोगों की जिन्दगी का मक़सद ऊंचे क़िस्म का रहन सहन, अच्छा खाना, अच्छा पहनना और नफ़सानी ख़्वाहिशात (काम–इच्छा) पूरा करना और इन ज़रूरतों के लिए जैसे भी हो धन दौलत हासिल करना है।

दहरियों के बरअक्स (विपरीत) धम्र वाले हैं सभी धर्म वाले ख़ुदा के वजूद (अस्तित्व) पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं लेकिन उस की सिफ़ात (गुणों) में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कोई कहता है कि जब दुन्या वालों का कोई अहम मसअला (जटिल समस्या) हल करना होता है तो ख़ुदा औतार लेता है किसी का कहना है कि वह अपना रसूल भेजता है। धर्म वाले रूह के बारे में भी मुख़्तलिफ रायें रखते हैं। कोई तनासुख (आवा गमन) का क़ाइल है तो कोई उस का मुख़ालिफ़। कोई कहता है कि यह रूह आवागमन से छुटकारा पाकर अपने पैदा करने वाले से जा मिलती है। किसी का कहना है नहीं क़ियामत में रूह को फिर जिस्म मिलेगा और वह अपने कर्मों के मुताबिक़ या तो जन्नत में दाख़िल हो कर वहां के इनआमात से आनन्द लेगी या जहन्नम में सज़ा भोगे गी। हर धर्म वाला अपनी बात के सुबूत (प्रमाण) में अपने मज़हब की किताबों का हवाला देता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

और अपने बाज़ू मोमिनों के लिए झुकाइये (हिज्र : ८८)

इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमानों को आपस में एक दूसरे से मेहरबानी के साथ पेश आना चाहिए। कोई ऐसा काम ना करना चाहिए जिसमें किसी मुसलमान की रुस्वाई है। इसको तवाज़ुअ या ख़ाक्सारी (नम्रता) कहते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स ख़ुदा के लिए ख़ाक्सारी करता है ख़ुदा उसको बुलन्द कर देता है।

ख़ाक्सारी का यह मतलब नहीं है कि आदमी अपने को बिल्कुल गिरा दे और पस्त हो जाए बल्कि मतलब यह है कि ग़ुरूर न पैदा हो और हर शख़्स एक दूसरे की इज़्ज़त करे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ख़ाक्सारी इख़्तियार करो ताकि कोई किसी पर ज़ुल्म न करे और कोई किसी के मुक़ाबिल में फ़ख़्र न करे।

एक बार मुहम्मद बिन हनफ़ीया ने हज़रत अली (रज़ि०) से पूछा कि रसूलुल्लाह के बाद सब से अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) कौन है? आप बोले "अबू बक्र" फिर पूछा उनके बाद? आप बोले 'उमर' इस के बाद मुहम्मद बिन हनफ़ीया ने ख़ुद ही फ़रमाया कि उनके बाद आप? फ़रमाया मैं तो मुसलमानों का एक मामूली फ़र्द (साधारण व्यक्ति) हूं। हज़रत सलमान फ़ार्सी मदाइन के हाकिम थे लेकिन इस तरह रहते थे कि कोई उनको पहचान नहीं सकता था। एक बार एक शख़्स ने घास ख़रीदी और उनको पकड़ कर उन के सर पर लाद दी वह ले चले तो जो लोग पहचानते थे उन्होंने कहा यह तो सहाबीये रसूल और मदाइनके हाकिम हैं। उसने कहा मुआफ़ फ़रमाइये मैंने पहचाना नहीं बोझ रख दीजिए, बोले नहीं घर पहुंचा कर उतारूंगा।

ईसार (उत्सर्ग)

और अपने ऊपर तंगी ही क्यों न हो इन मुहाजिर भाइयों को अपने से मुक़द्दम (प्रथम) रखते हैं (हश्र:६)

दूसरों की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतो पर मुक़द्दम रखना (प्राथमिकता देना) यही ईसार (उत्सर्ग) है। ख़ुद भूखा रहे और दूसरों को खिलाए, ख़ुद तकलीफ़ उठाए और दूसरों को आराम पहुंचाए, मक्के के मुसलमान जब अपना घर बार छोड़ कर मदीना आए तो अन्सार ने उनको हाथों हाथ लिया, उनको अपने घर दिये, बाग़ दिये, खेत दिये ख़ुद हर तरह की तक्लीफ़ें उठा कर उनको आराम पहुंचाया।

एक बार एक भूखा आदमी रसूलुल्लाह के पास आया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में उस वक़्त पानी के सिवा कुछ न था इस लिए फ़रमाया कि जो शख़्स आज की रात इसको अपना मेहमान बनाएगा ख़ुदाए तआला उस पर रहम करेगा। एक अन्सारी उसको अपने घर ले गये और बीवी से पूछा घर में कुछ है? बोलीं सिर्फ़ बच्चों का खाना है। कहा कि बच्चों को सुला दो और चिराग़ को बुझा दो। हम दोनों रात भर भूखे रहेंगे, लेकिन मेहमान पर ज़ाहिर करेंगे कि खा रहे हैं। उन लोगों ने ऐसा ही किया। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस सुलूक (व्यवहार) से अल्लाह तआला बहुत ख़ुश हुआ।

एअ्तिदाल (सन्तुलन)

और ढूंढ ले उसके बीच में राह। (बनी इस्राईल : ११०)

इस्लाम की तालीम (शिक्षा) है कि किसी काम में न ज़ियादती करना चाहिए न कमी बीच की चाल चलना चाहिए। यह निभ जाती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उतना करो जितना बराबर कर सको, फ़रमाया दौलत मन्दी में बीच की चाल कितनी अच्छी है। मुहताजी (निर्धनता) में बीच की चाल कितनी अच्छी है। इबादत (उपासना) में बीच की चाल कितनी अच्छी है।

सख़ावत कितनी अच्छी चीज़ है लेकिन ख़ुदा ने इस में भी बीच की चाल चलने का हुक्म दिया है कि दूसरों को देकर तुम ख़ुद इतने मुहताज न बन जाओ कि मांगने की नौबत आए।

इबादत से बढ़कर और कोई

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

रात के वक्त घर न लौटा जाए–

३२९. हज़रत जाबिर (रज़ि०)से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम में से कोई व्यक्ति अपने घर वालों से ज्यादा दिनों तक ग़ायब रहे तो रात के वक्त घर न लौटे।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

सफर से वापस आए तो पहले मस्जिद जाए –

३३०. हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) जब सफर से वापस होते थे तो पहले मस्जिद तशरीफ ले जाते थे और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते थे।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

अपने से नीचे वाले को देखो–

३३१. हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम (दुनियावी खुशहाली में) अपने नीचे वाले को देखो अपने से ऊंचे वाले को न देखो कि यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है ताकि तुम पर अल्लाह तआ़ला की जो नेअ़मतें हैं उनको हक़ीर न समझो।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

रास्ते के हुकूक़–

३३२. हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम लोग रास्ते पर बैठने से एहतियात किया करो, सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी (सल्ल०) बैठना तो ज़रूरी है हम लोग बैठकर बातें करते हैं, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर बैठना ही चाहते हो तो रास्ते का हक़ अदा करो। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया अल्लाह के नबी (सल्ल०) रास्ते का हक क्या है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : निगाह का नीची रखना, किसी को तकलीफ न पहुंचाना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म करना बुराई से रोकना। (बुखारी, मुस्लिम)

निगाह नीची रखने और अलग अलग लेटने का हुक्म –

३३३. हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया मर्द के जिस्म के उस हिस्से को न देखे जिसका छिपाना और पर्दा करना ज़रूरी है, और न औरत के जिस्म के उस हिस्से को देखे जिसका छिपाना ज़रूरी है और दो मर्द एक बिस्तर में न लेटें और न दो औरतें एक बिस्तर पर लेंटे। (मुस्लिम)

देवर से पर्दा की ताकीद –

३३४. हज़रत उक़बः बिन आमिर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया तुम नामहरम औरतों के पास जाने से दूर रहो हज़रात अन्सार में से एक व्यक्ति ने पूछा : देवर के लिए आप क्या फ़रमाते हैं, फ़रमाया देवर तो मौत है (यानी उसके साथ गुनाह में फंस जाने का ज्यादा अन्देशा है)

गुनाह से बचने का तरीक़ा –

३३५. हज़रत जाबिर (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत फ़रमाते हैं कि नामहरम औरत जब सामने आती है तो शैतान बनकर सामने आती है, जब तुम में से कोई किसी औरत को देखे तो अपनी बीवी के पास आए, कि उसके पास वही है जो उस गैर औरत के पस है। (तिर्मिज़ी)

अच्छे और बुरे साथी की मिसाल–

३३६. हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल० ने फ़रमाया कि अच्छे और बुरे साथी की मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क बेचने वाले और भट्टी जलाने वाले की, मुश्क बेचने वाला या तुम्हें कुछ दे देगा या तुम उससे ख़रीदोगे या तुम्हें अच्छी खुशबू तो मिलेगी ही और भट्टी जलाने वाला या तो तुम्हारे कपड़े जला देगा या कपड़े न भी जले तो बद्बू ही उसके पास मिलेगी।(फ़ायदा कुछ नहीं) (बुख़ारी)

३३७. हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि नेक साथी की मिसाल ऐसी है जैस मुश्क बेचने वाला अगर उससे तुमको कुछ न मिलेगा तो खुशबू तो मिलेगी ही और बुरे साथी की मिसाल भट्टी जलाने वालेकी सी है कि अगर उससे कपडे न काले होंगे तो धुंआ तो लगेगा ही। (अबूदाऊद नसई)

अच्छा इन्सान अच्छा ही होता है –

३३८. हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि लोग सोने चांदी की कानो की तरह हैं इनमें से जो लोग

जाहिलियत के जमाने में अच्छे होते हैं वह इस्लाम लाने के बाद भी अच्छे होते हैं जबकि उनको दीन की समझ हासिल हो जाए, तमाम रूहें दुनिया में आने से पहले एक जगह जमा की गईं, जिन दो रूहों का आपस में तआरूफ़ हुआ तो मानूस हो गयीं। जिन दो रूहों में अजनबियत रही उनमें इख्तिलाफ हुआ।

(मुस्लिम)

दोस्त और साथी से आदमी की पहचान –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया कि आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, इसलिए तुम में का हर व्यक्ति यह देख ले कि किस से दोस्ती कर रहा है। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

नेक और शरीफ इन्सान की ख़िदमत करनी चाहिए –

३४०. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम केवल मोमिन से दोस्ती करो और खाना मुत्तकी और परहेज़गार ही को खिलाओ। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

अल्लाह के लिए मुहब्बत करने वालों पर अल्लाह की मुहब्बत वाजिब होती है–

३४१. हज़रत अबू इद्रीस खौलानी ने फ़रमाया मैं दिमश्क की मस्जिद में दाखिल हुआ अचानक मेरी नज़र एक नौजवान पर पड़ी जिस के दांत चमकीले थे और उसके आस–पास लोगों की भीड़ थी जब उनमें किसी बात पर इख्तिलाफ होता तो उस नौजवान की ओर रूजूअ करते और उसका फैसला कुबूल करते। मैंने उस नौजवान के विषय में पूछा तो बताया गया कि हज़रत मआज़ बिन जबल हैं दूसरे दिन सुबह सवेरे मैं उनकी ख़िदमत में हाजिर हुआ देखा कि वह हम से पहले उठ चुके हैं और नमाज़ में मश्गूल हैं मैं ने नमाज़ से फ़ारिग होने का इन्तिज़ार किया जब पढ़ चुके तो मैं उनके सामने से आया और सलाम किया फिर मैंने कहा खुदा की क़सम मैं आप से मुहब्बत करता हूं उन्होंने कहा क्या अल्लाह के लिए मुहब्बत करते हो मैं ने कहा हां अल्लाह के लिए दोबारह फिर उन्होंने कहा क्या तुम अल्लाह के लिये मुहब्बत करते हो मैंने कहा हां अल्लाह के लिए फिर उन्होंने मेरी चादर का किनारा पकड़ कर अपनी ओर खींचा फिर फ़रमाया! खुशखबरी सुनो, मैंने हुजूर (सल्ल०) को फरमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला ने फरमाया, मेरी रज़ा के लिए आपस में मुहब्बत करने वाले मेरे लिए मिल बैठने वाले मेरे लिए एक दूसरे से मिलने जुलने वाले मेरी राह में खर्च करने वाले लोगों पर मेरी मुहब्बत वाजिब हो गयी। (मुवत्ता इमाम मालिक)

सबसे क़ीमती चीज शौहर के लिए नेक बीवी है–

३४२. हज़रत सौबान (रज़ि०) से रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हम लोग रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के साथ एक सफ़र में थे, कुछ सहाबा ने अर्ज किया कि आयत सोने चांदी के बारे में नाजिल हुई है, अगर हमें मालूम हो जाता कि कौन सा माल बेहतर है तो हम लोग उसी को हासिल करते, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया सब से अफ़ज़ल माल खुदा की याद में मश्गूल रहने ज़बान, शुक्रगुज़ार दिल और मोमिन औरत है जो ईमान की ज़रूरतों को पूरा करने में शौहर की मददगार हो।

दीनदार औरतों को बीवी बनाने में कामियाबी –

३४३. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि औरत से चार चीज़ों की वजह से शादी की जाती है, उसके माल की वजह से, हसब व नसब की वजह से, खूबसूरती की वजह से, उसके दीन की वजह से, तुम दीनदार औरत से शादी करो क़ामियाब रहोगे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

नबी करीम (सल्ल०) के बुलन्द अख्लाक –

३४४.हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) ने फ़रमाया, रसूलुल्लाहि (सल्ल०) सबसे बेहतर अख्लाक़ वाले थे हुजूर (सल्ल०) की हथेली से ज्यादा मुलायम दीबाज़ और रेशम भी नहीं मालूम हुआ। न ही हुजूर (सल्ल०) की खुशबू से बढ़कर मैंने कोई खुशबू सूंघघी। मैंने दस साल हुजूर (सल्ल०) की ख़िदमत की इस ज़माने में मुझे उफ तक न फ़रमाया, न मुझे किसी काम के बारे में फ़रमाया, तुम ने क्यों किया और अगर किसी काम को नहीं किया तो यह नहीं फ़रमाया कि तुम ने यह क्यों नहीं किया? (बुख़ारी व मुस्लिम)

(पृष्ठ ५ का शेष)

नेकी नहीं लेकिन उस में भी हुक्म है कि इतनी ज़ियादा न हो कि आदमी दूसरे कामों के लाइक़ न रहे और न इतनी कम हो कि ख़ुदा को भूल जाए।

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन ने जब रातें नमाज़ में और दिन रोजों में बसर करना शुरू किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको रोका और फ़रमाया कि तुम्हारे ज़िम्मे और भी हक़ हैं।

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

संयुक्त नामों का प्रचलन –

नामों के बारे में यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि हिन्दुस्तान में मिश्रित अथवा संयुक्त नामों का अधिक प्रचलन है, यथा–मुहम्मद हुसैन, महमूद हसन, उस्मान अहमद, अली मुर्तुजा आदि। जब कि अरब देशों में अधिकांश इकहरे अथवा अमिश्रित नाम रक्खे जाते हैं और जो नाम मिश्रित होते हैं, उनमें पहला नाम व्यक्ति विशेष का और दसूरे नाम को पिता का नाम समझा जाता है अथवा पूर्ण नाम का दूंसरा अंश वर्ग विशेष अथवा उपनाम होता है। भारत में केवल गुजरात प्रान्त में पुत्र तथा पिता का नाम मिला कर लिया जाता है, इस प्रकार नाम का प्रथम भाग व्यक्ति विशेष का नाम तथा दूसरा भाग पिता का नाम होता है।

हिन्दुस्तानी रूप धारण किये हुए नाम तथा उपनाम–

हिन्दुस्तान में पूर्णरूपेण भारतीय बनावट के नामों का भी प्रचलन है और यह वह नाम हैं जिन में एक भाग या दोनों भाग उर्दू अथवा फारसी भाषा या स्थानीय बोलियों के होते हैं और इनसे आसानी से पहचाना जा सकता है कि यह हिन्दुस्तानी हैं। यथा–बुन्याद हुसेन, गुलजार अली, अल्ला दिया, बरखुरदार, उमरदराजबेग आदि। अनेक नाम खालिस हिन्दुस्तान की उपज हैं और वह नाम हिन्दुस्तान के बाहर कहीं सुनने में नहीं आये। अनेक नामों के अर्थ तथा उनकी वास्तविकता का पता लगाना भी कठिन है, जैसे, हुबदार खाँ, उमराओ मिर्जा, अमीर बाज खाँ, बाज मीर।

यहाँ उपनाम रखने का भी बड़ा रिवाज है। कुछ उपनाम इतने प्रसिद्ध हो जाते हैं कि निकट सम्बन्धियों को भी कभी कभी असली नाम का पता नहीं होता। यह साधारणतया लाड़ प्यार के शब्द, या आशीर्वादिक वाक्य अथवा बड़े तथा पूरे नामों का संक्षिप्त रूप होते हैं। यथा–नौशा मियाँ, प्यारे मियां, बसावन मियां, बन्ने मियां, जी मियां, अथवा नक्कन साहब, कब्बन साहब। इन उपनामों का रिवाज अवध और विशेषकर लखनऊ में बहुत हैं।

बिस्मिल्लाह ख्वानी की रस्म और उसका तरीका–

आमतौर पर रिवाज है कि बच्चा जब बोलने और बात करने योग्य हो जाता है तो किसी पढ़े लिखे पूणय व्यक्ति द्वारा उसकी बिस्मिल्लाह कराई जाती हैं। और उसको पढ़ने बैठा दिया जाता है।। शिष्ट एवं खाते पीते घरानों में यह रस्म सुव्यवस्थित रूप से अदा की जाती है और इसको 'तसमिया ख्वानी' या 'मकतब नशीनी' की संज्ञा दी जाती है। बहुत से स्थानों तथा परिवारों में यह रस्म उस समय अदा की जाती है जब बच्चा चार वर्ष, चार मास तथा चार दिन का होता हैं। इस संख्यात्मक विशेष्ता का स्रोत कहाँ से है और इसका आधार क्या है, यह हमको ज्ञात नहीं, हाँ इतना ज्ञात है कि इसका कोई धार्मिक आधार नहीं है। इस अवसर पर बिस्मिल्लाह कराने वाला 'बिस्मिल्ला हिर्रहमा–निर्रहीम (अर्थ–मैं आरम्भ करता हूँ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है) का उच्चारण बच्चे द्वारा करवाता है, फिर इस बात की दुआ करते हुए (ईश्वर से प्रार्थना करते हुए) कि विद्या इसके लिए सरल हो और इसका परिणाम अच्छा निकले, उसको 'काइदा बगदादी' की एक दो पंक्तियां अक्षरों पर उंगली रखवा कर पढ़वाता है। इस को इस प्रकार भी कहते हैं कि अमुक बच्चे की 'बिस्मिल्लाह' हो गई। सामान्य रूप से क्षमतानुसार मिठाई बाँटी जाती है अथवा उपस्थित व्यक्तियों का यथोचित सत्कार किया जाता है और सब उस बच्चे के चिरजीवी तथा भाग्यवान समझते हैं कि उनका पुत्र शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो गया।

कुरआन मजीद की शिक्षा का शुभारम्भ

इस 'तसमिया ख्वानी' के अतिरिक्त शिक्षा के सम्बन्ध में दो रस्में और भी प्रचालित हैं जिनकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण नौबत नहीं आती। एक उस समय जब बच्चे का कुरआन मजीद आरम्भ हेता है। उस समय बजाय 'काइदा बगदादी' के उस से सूर–ए–अलक की वह तीन आयतें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरी थीं,पढ़ाई जाती हैं। सब आयतें इस अवसर के लिये अत्यन्त समयानुकूल और भाव पूर्ण हैं। यहां इन आयतों का अर्थ लिखा जाता है।

अल्लाह के नाम से,
जो अत्यन्त कृपाशील और दया वान् है।
(ऐ मुहम्मद) पढ़ो अपने रब का
नाम लेकर, जिसने पैदा किया।

पैदा किया मनुष्य को एक खून के लोथड़े से।
पढ़ो, और तुम्हारा 'रब' बड़ा उदार है।
जिसने कलम द्वारा ज्ञान दिया।
ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज का
जिसे वह नहीं जानता था।

(अल–अलक,१–५)

क़ुरआन मजीद का समापन्न और उसका समारोह

दूसरी रस्म कुरआन मजीद के समापन की है अर्थात् जब बच्चा कुरआन मजीद खत्म कर लेता है, तो फिर एक छोटा सा समारोह किया जाता है। इस अवसर पर कहीं कहीं गुरू को जोड़ा (कुर्ता, पाइजामा,टोपी आदि) पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। इस समारोह को 'नशरह' भी कहते हैं।

शुद्धता एवं पवित्रता की शिक्षा–दीक्षा

बच्चा जब कुछ बड़ा और समझदार हो जाता है और उसकी बुद्धि प्रखर होने लगती है अथवा उसमें समझने बूझने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है तो उसको 'तहारत' लेने की शिक्षा दी जाती है अर्थात् मल–मूत्र के बाद पानी द्वारा पवित्रता हासिल करना। अपवित्र वस्तुओं से बचने और शरीर तथा वस्त्रों को अपवित्र वस्तुओं से बचाने के निर्देश दिये जाते हैं। स्पष्ट है कि बच्चा पूर्ण रूप से सावधनी नहीं बरत सकता और उसमें वातावरण, शिक्षण–प्रशिक्षण और पारिवारिक व्यवसाय का बहुत कुछ हाथ होता है, परन्तु फिर भी धार्मिक विचार धारा के माता–पिता क्षमतानुसार इसका उचित प्रबन्ध करते हैं।

नमाज़ की शिक्षा–दीक्षा तथा प्रशिक्षण–

इस अवस्था में बच्चे को वुज़ू करना भी सिखा दिया जाता है और नमाज का भी शौक दिलाया जाता है। पिता या परिवार के बड़े बूढ़े प्रायः बच्चे को अपने साथ मस्जिद ले जाते हैं और वह अपने बड़ों तथा मुहल्ले वालों के साथ खड़ा होकर नमाज की प्रकिया का अनुकरण करने लगता है। हदीस शरीफ में आता है, बच्चा जब सात वर्ष का हो जाय तो नमाज पढ़ने का निर्देश दिया जाय और जब दस वर्ष का हो तो आग्रह और नमाज न पढ़ने पर तंबीह की जाय अर्थात् थोड़ा दण्ड दिया जाय।

इस्लामी शिष्टाचार तथा सामाजिक आचार–व्यवहार का शिक्षण प्रशिक्षण

इसी आयु में धार्मिक मां बाप और पढ़ी लिखी मातायें बच्चे को इस्लामी शिष्टाचार की शिक्षा देती हैं यथा–सब अच्छे कार्य (भोजन करना, पानी पीना, हाथ मिलाना आदि) दाहिने हाथ से किये जायें और शौच आदि कार्यों में बायाँ हाथ प्रयोग किया जाए। पानी बैठ कर और जहाँ तक सम्भव हो तीन सांसों में पिया जाय, बड़ों को सलाम किया जाय, छींक आने पर 'अलहम्दु लिल्लाह' (अल्लाह का शुक्र है) कहा जाय, भोजन 'बिस्मिल्लाह' कह कर आरम्भ किया जाय और 'हम्द व शुक्र' पर समाप्त किया जाये। इसी आयु में उस को कुरआन मजीद की छोटी छोटी सूरतें और दैनिक कार्यों से सम्बन्धित दुआयें आदि याद करा दी जाती हैं। खुदा के पैगम्बरों तथा नेक बन्दों के जीवन चरित्र से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं सुनाई जाती हैं,जिनसे उनके विश्वासों में शुद्धता एवं परिपक्वता विद्यमान हो, विचार शुद्ध एवं स्वच्छ बनें, और वह उन्हें अपने लिये आदर्श–पात्र समझने लगें।

रोज़ा कुशाई का आयोजन

यों तो रोज़ा रखना मुसलमान पर बालिग़ होने के बाद फर्ज़ होता है, लेकिन सामान्यतया मुसलमान बच्चे उल्लासपूर्ण अपने घर के वातावरण से प्रभावित होकर छोटी आयु से ही रोजा रखना आरम्भ कर देते हैं। कुछ तो छुप कर रोजा रख लेते हैं और अधिकांश माता–पिता ग्यारह–बारह वर्ष की आयु में रोजा रखाते है। उस दिन खुशी में सगे–सम्बन्धियों, मित्रों तथा बालक के हमजोलियों तथा उसके दोस्तों को आमान्त्रित करते हैं। उस दिन इफतारी में विशेष भोज्य पदार्थो का प्रबन्ध किया जाता है और विभिन्न प्रकार की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। साधारण अवस्था के लोग भी उस दिन कुछ न कुछ विशेष आयोजन करते हैं। इसका नाम 'रोजा कुशाई' है। प्रगतिशीलता एवं सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ इसमें कृत्रिमता आती गई और इसमें भी अनेक क्षेत्रों में एक अच्छे खासे समारोह और छोटी मोटी 'दावते वलीमा' का रूप धारण कर लिया है।

बालिग़ होते ही लड़के एवं लड़की पर नमाज, रोजा और विशिष्ट शर्तों के साथ (जिन का उल्लेख मसअले, मसायल की किताबों में देखा जा सकता है) जकात और हज फ़र्ज़ हो जाते हैं, और इनके छोड़ने पर वह गुनहगार ठहरता है। अब हलाल, हराम, अज़ाब सवाब का, नियम उस पर लागू हो जाता है, और वह एक ज़िम्मेदार, समझदार और एक प्रौढ़ व्यक्ति की भांति अपने कर्मों का, लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रति उत्तरदायी हो जाता है।

●●●

मुहम्मद बिन सीरीन की सत्यवादिता और निडरता

डा० मु० इज्तिबा नदवी

सिद्दीक़ी शासन काल में इराक़ की एक जंग में इसलामी सेना के कमानदार हजरत खालिद बिन वलीद को कैदियों में ४० गुलाम मिले। उनमें एक अत्यन्त गम्भीर और शान्त स्वभाव के नवयुवक 'सीरीं' भी थें। जब गुलामों का बंटवारा हुवा तो वे नबी. सल्ल. के सेवक हजरत अनस बिन मालिक रजि. के हिस्से में आए। सीरीं तांबे के बरतन बनाते थे और अपने काम में बड़े निपुण थे। सीरीं बड़ी अच्छी पतीलियां बनाया करते थे। इसी के साथ वे हजरत अनस बिन मालिक रज़ि० और दूसरे सहाबा किराम रज़ि० से दीन का ज्ञान हासिल करते रहे। कुछ समय के बाद उनके स्वभाव और दीन के ज्ञान में उनकी रूचि को देखते हुए हजरत अनस रज़ि० ने उन्हें आजाद कर दिया। अतः उन्होंने सोचा कि अब दीन की शिक्षा पूरी कर ली जाए।

अमीरूल मोमिनीन हजरत अबू बक्र रज़ि० की एक बान्दी सफिया थी। सुन्दरता के साथ सदाचार, दीनदार बुद्धिमानी, समझदारी और प्रसन्न चित रहना, उनके विशेष गुण थे। मदीना की छोटी बड़ी औरतें, सब उनको पसन्द करती थीं। उम्महातुल मोमिनीन (रसूलुल्लाह की पत्नियां, जिन को उम्मत की मां कहा गया है) मुख्य रूप से हजरत आएशा रज़ि० उनको बहुत चाहती थीं। हज़रत सीरीन ने सफ़ीया के गुणों के कारण उनसे शादी करने का इरादा कर लिया, अतएव वे हजरत अबू बक्र रज़ि० की सेवा में शादी का सन्देश लेकर पहुंचे। हजरत सिद्दीक अकबर रज़ि० ने एक कृपालु और स्नेह करने वाले बाप की तरह जो अपनी बेटी के मंगेतर को दीनी, नैतिक और सामाजिक स्थिति की छान बीन करता है, सीरीन के हालात मालूम करने शुरू किए। मुख्य रूप से उनके पूर्व मालिक हजरत अनस बिन मालिक रज़ि० से उनके दीन और आचरण के बारे में पूछा तो हजरत अनस रज़ि० ने जवाब दिया कि अमीरूल मोमिनीन ! आप बिना संकोच शादी कर दीजिए और किसी डर या शंका को दिल में न रखिए। मैं सीरीन के दीन, आचरण और उच्च गुणों से अच्छी तरह परिचित हूं।

हजरत अबू बक्र रज़ि० ने अपनी इस बान्दी की शादी अपनी बेटी की तरह बड़ी मोहब्बत व स्नेह के साथ जनाब सीरीं से कर दी। सहाबा किराम रज़ि० बड़ी संख्या में शादी में शरीक हुए, जिनमें १८ बदरी सहाबी भी थे। वह्य लीपिबद्ध करने वाले अति प्रतिष्ठित सहाबी हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि० ने उनके लिए दुआ कीं उम्महातुल मोमिनीन ने उन्हें अपने हाथों से दुल्हन बनाया। इस मुबारक शादी के नतीजे में उनको एक ऐसा बेटा अल्लाह ने प्रदान किया जो बड़े ऊंचे दर्जे के ताबअी, असाधारण योग्यता के विद्वान और इस्लाम के प्रमुख प्रचारक व विचारक हुए। इनका नाम मुहम्मद रखा और वे इतिहास में मुहम्मद बिन सीरीं के नाम से याद किए गए। उन्होंने हजरात सहाबा जैद बिन साबित, अनस बिन मालिक, इमरान बिन हसीन, अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अबू हुरैरा रजि० से दीन का ज्ञान प्राप्त किया।

अभी जवान ही थे कि मां बाप के साथ बसरा आकर आबाद हो गए। इस शहर की इलमी व दीनी मज्लिसों से बड़ा लाभ उठाया। उन्होंनें अपने समय को दो भागों में बांट लिया। एक भाग रोजी कमाने में लगाते और दूसरे को पढ़ने लिखने और अल्लाह की इबादत में लगाते। रातों में नफ्ल नमाज़ें, कुरआन की तिलावत और अल्लाह के जिक्र में व्यस्त रहते। कभी कभी उन पर अल्लाह का इतना भय छा जाता कि रोने लगते और इतना रोते और गिड़ गिड़ाते कि न केवल घर वाले बल्कि पास पड़ोस के लोग भी उन पर दया खाते। अल्लाह ने उनकी जबान में बड़ी ही मिठास रखी थी। बात में बड़ा प्रभाव था जैसे जादू करते हों। वे क्रय विक्रय के बीच भी लोगों को दीन की बातें बताते और नसीहत करते। दीन की सूझ बूझ और उसकी शिक्षाओं पर उनकी बड़ी गहरी नजर थी। कभी कभी वे कुछ ऐसे भी काम पर जाते जिन पर लोग आश्चर्य चकित रह जाते। इसी प्रकार की उनकी एक घटना यहां दी जाती है।

एक व्यक्ति ने उन पर यह झूठा दावा किया कि उनकी तरफ उसके दो दिरहम उधार हैं। हज़रत मुहम्मद बिन

सीरीन ने उसे दो दिरहम देने से इनकार कर दिया तो उस व्यक्ति ने उनसे कहा कि क्या आप हलफ उठाएंगे ? उसका अनुमान था कि वे दो दिरहम के लिए कसम नहीं खाएंगे। लेकिन इब्ने सीरीन ने हलफ उठाने की हामी भर ली और तुरन्त तैयार हो गए। लोगों ने कहा कि आप दो दिरहम के लिए हलफ उठा रहे हैं यद्यपि आपने कल चालीस हजार दिरहम इस कारण माफ कर दिए कि आपको उसमें थोड़ा सा ऐसा सन्देह हो गया जैसा कि किसी को नहीं होता है। उनहेंने जवाब दिया कि हां मैं शपथ लूंगा क्योंकि मैं नहीं चाहता हूं कि इसे हराम खिलाऊं। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि इसके लिए ये दो दिरहम हराम होंगे।

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन को बनू उमय्या के प्रसिद्ध व प्रभावशाली गवर्नर उमर बिन हुबैरह फजारी ने एक दिन बुला भेजा तो वे अपने भाई के साथ गवर्नर की बैठक में दाखिल हुए। गवर्नर ने उनका भव्य स्वागत किया और उनको सम्मान के साथ ऊंची जगह पर बैठाया और दीन व दुनिया के बारे में उनसे बहुत से सवाल किए । फिर कहा ऐ अबू बक्र आपने अपने शहर वालों को किस हाल में छोड़ा ? जवाब दिया कि वे सब के सब जुल्म का शिकार हैं। फिर सवाल किया आप उनकी ओर से पूरी तरह निश्चिन्त हैं। उनके भाई ने उनके कोहनी मारी तो अपने भाई से बोले उनके बारे में तुम से सवाल नहीं किया जा रहा है, बल्कि मुझसे पूछा जा रहा है कि यह एक तथ्य है। अल्लाह का इर्शाद है कि :

'और जो व्यक्ति उसे छुपाएगा तो उसका दिल गुनाहगार है'

बैठक खत्म होने के बाद उमर बिन हुबैरह ने उसी आदर, सम्मान के साथ उन को विदा किया। बाद में उनकी सेवा में तीन हजार दीनार की एक थैली भेजी। मगर उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया। उनके भाई के बेटे ने उनसे कहा कि अमीर का हदिया स्वीकार करने में क्या बाधा है? कहा कि मुझसे अच्छी भावना और भलाई की आशा करके यह रकम भिजवाई है यदि मैं इसके विचार के अनुसार भलाई करने वालों में से हूं तो मेरे लिए इस का स्वीकार करना उचित नहीं है। और यदि मैं उसके विचार के अनुसार ऐसा नहीं हूं तो फिर मुझे किसी भी सूरत में इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए।

(पृष्ठ ४ का शेष)

रूह (प्राण) और मरने के बाद के वाक़िआत की जानकारी का तअल्लुक़ ग़ैब (परोक्ष) से है। इन्सान अपने हवास (इन्द्रियों) और तजरिबात (अनुभवों) से इनको नहीं जान सकता न यही जान सकता है कि हमारा पैदा करने वाला हम से क्या चाहता है और वह हम से कैसे राज़ी हो सकता है? लिहाज़ा हमारे रहीम व करीम ख़ालिक़ ने इस का ख़ुद इन्तिज़ाम कर दिया और अपने नबी व रसूल (सन्देष्टा) भेजे और उनकी तस्दीक़ के लिए उनको मुअ़जिज़े (अदभुत बातें) दिये जिनको देखकर नेक रूहें उन पर ईमान लाईं और उनकी बताई हुई ग़ैब की बातों को मानकर और उनके बताये रास्ते पर चलकर आख़िरत (परलोक) की हमेशा वाली ज़िन्दगी का सुख हासिल (प्राप्त) कर लिया।

नबियों के सिलसिले के अन्त में अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भेजा आप को अनगिनत मुअ़जिज़ात दिये। मिअ़राज भी उनमें का एक मुअ़जिज़ा है। हम मुसलमान उनपर ईमान लाये । आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तालीम दी कि एक ऐसी ज़ात जिस में सभी अच्छी सिफ़ात (गुण) मौजूद हैं उस का ज़ाती नाम अल्लाह है। उसके सिफाती नाम बहुत से हैं। वह ख़ालिक़ है और उसके सिवा जो कुछ है उसी की पेदा की हुई मख़लूक़ हैं। उस ने इन्सानों को अपनी पसन्द की राह दिखाने के लिए बहुत से पैग़म्बर भेजे जो हर ज़माने में और हर क़ौम में आते रहे। हर पैग़म्बर ने अल्लाह पर ईमान लाने की दावत दी। पैग़म्बरों की तस्दीक़ के लिए अल्लाह ने उनको मुअ़ज़िज़े दिये सब से आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने मुझ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा।

आप पर अल्लाह तआला ने क़ुर्आन उतारा। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने २३ वर्ष तक उम्मत को दीन पहुंचाया। आप की तालीमात अहादीस में महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं। आप ने बताया कि मुझ से पहले बहुत से पैग़म्बरों का आना सत्य है। उन का अनुकरण करने वाले सब नजात पाएंगे लेकिन आख़री पैगम्बर के आ जाने के बाद यानी मेरे आ जाने के बाद अब नजात के लिए आख़िरी नबी यानी मुझ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को अख़ीरी नबी मानना और मेरा इत्तिबाअ़ (अनुकरण) करना आवश्यक है।

●●●

निज़ामे क़ज़ा की स्थापना का महत्व और उसकी आवश्यकता

न्याय की स्थापना, अधिकारों की सुरक्षा और इस्लामी शरीअ़त के आदेशों का प्रचलन इस्लामी उम्मत का महत्व पूर्ण कर्तव्य है। इस्लामी शरीअ़त के आदेशों को लागू करके ही हम इंसाफ़ की स्थापना का कर्तव्य अदा कर सकते हैं और मुसलमानों की ज़िन्दगी को इस्लामी असास पर मुनज़्ज़म कर सकते हैं। वह मशीनरी जो अल्लाह की शरीअ़त (विधान) को इंसानों पर लागू करती है और उनके आपसी झगड़ों का फ़ैसला ख़ुदा के उतारे हुए क़ानून के अनुसार करती है, शरीअ़त की शब्दावली में उसे "क़ज़ा" कहते हैं और जो व्यक्ति इस पद पर नियुक्त होता है उसे "क़ाज़ी" कहते हैं।

अल्लाह के क़ानून के अनुसार फ़ैसला करना अंबिया अ़लैहिस्सलाम, अल्लाह के वलियों और दीन के उ़लमा का कार्य रहा है क्योंकि वह अल्लाह की किताब के रक्षक थे।

"हमने नाज़िल की तौरेत कि इस में हिदायत (निदेश) और रोशनी है। उस के मुताबिक़ हुक्म करते थे पैग़म्बर जोकि हुक्म बरदार थे अल्लाह के, यहूद को और हुक्म करते थे अल्लाह वाले और उ़लमा इस वास्ते कि वह निगाहबान ठहराए गए थे अल्लाह की किताब पर और उसकी ख़बरगीरी पर मुक़र्रर थे सो तुम न डरो लोगों से और मुझसे डरो।"

(अनुवाद–सूरः माएदा : ४४)

सय्यिदना दाऊद अ़लैहिस्सलाम को इस का आदेश दिया गया –

"ऐ दाऊद ! हमने बनाया तुझे नाएब मुल्क में। पस फ़ैसला कर लोगों के दर्मियान हक़ के साथ और न चल ख़्वाहिशे नफ़्स पर कि वह तुझ को भटका दे अल्लाह के रास्ते से।" (सूरः स्वाद–२६ अनुवाद)

अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी आदेश दिया गया कि लोगों के आपसी झगड़ों के फ़ैसले अल्लाह तआ़ला के उतारे हुए क़ानून के द्वारा करें।

"और तुम पर उतारी हमने किताब सच्ची तस्दीक़ करने वाली साबिक़ (पिछली) किताबों की और उनके मज़ामीन पर निगहबान सो तू हुक्म कर उनके दर्मियान, मुवाफ़िक़ (अनुसार) उसके जो कि उतारा अल्लाह ने, और उनकी ख़्वाहिश पर मत चल छोड़ कर सीधा रास्ता जो तेरे पास आया। (सूरः माएदा–४८)

मुसलमानों को हुक्म दिया गया कि अल्लाह तआ़ला उसके रसूल और उलुल अम्र (शरअ़ी हाकिम) की इताअ़त करें और अपने आपसी झगड़ों को अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटाएं। अल्लाह तआ़ला और आख़िरत का यही तक़ाज़ा है और इसी में ख़ैर और अंजाम की ख़ूबी है।

"ऐ इमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और हाकिमों का जो तुम में से हों फिर अगर झगड़ा पड़े तुम में किसी अमर में तो उसको लौटाओ अल्लाह और रसूल की तरफ़ अगर यक़ीन रखते हो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर। यह बात अच्छी है, और बेहतर है इस काम का अंजाम।" (अनुवाद–सूरः निसा–५९)

हुक्म दिया गया है कि अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई शरीअ़त का पालन किया जाए और दूसरों की इच्छाओं की पैरवी न की जाए।

फिर तुझ को रखा हमने एक रास्ते पर दीन के काम के सो तू उस पर चल और मत चलना नादानों की ख़्वाहिशों पर।" (अनुवाद–सूरः अल जासियः १८)

मोमिन के लिए इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं कि वह अपने झगड़े में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हाकिम माने और उनके फ़ैसलों के सामने हंसी खुशी सिर झुकादे। शरअ़ी काज़ी अल्लाह और रसूल का नुमाइन्दा होता है। उसे मन माने फैसले का अधिकार नहीं है बल्कि वह इसी का मुकल्लफ़ (भारित) है कि मुक़दमे के फैसले में अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म को जारी व लागू करे।

"सो क़सम है तेरे रब की वह मोमिन न होंगे यहां तक कि तुम को ही मुंसिफ, जानें उसे झगड़े में जो उन में उठे। फिर न पावें अपने जी में तंगी तेरे फ़ैसले से और क़ुबूल करें ख़ुशी से" (अनुवाद–सूरः निसा ६५)

जब मुसलमानों को अल्लाह

तआला और उसके रसूल सल्ल० के फ़ैसले की तरफ़ बुलाया जाए तो उनका तरीक़ा बस यही होना चाहिए कि सुनें और आज्ञा पालन का इज़हार करें और उस पर अमल करें। यही उनकी नजात (मुक्ति) का रास्ता है।

"इमानवालों की बात यही है कि जब बुलायें उनको अल्लाह रसूल की तरफ़ फ़ैसला करने को उनके दर्मियान तो कहें कि हमने सुन लिया और हुक्म मान लिया और यही लोग फलाह (नजात) वाले हैं।" (सूरः नूर–५१)

अल्लाह तआला की उतारी हुई शरीअत (धार्मिक कानून) को फ़ैसले की बुन्याद न बनाना सख़्त वईद (चेतावनी) का कारण है। इस तरीक़े को क़ुर्आन में कहीं कुफ़्र कहीं ज़ुल्म और कहीं फिस्क़ (पाप) से तअबीर किया गया है (बताया गया है)

"और जो कोई हुक्म न करे उसके अनुसार जो अल्लाह ने उतारा सो वही लोग काफ़िर हैं और जो कोई हुक्म न करे उसके अनुसार जो अल्लाह ने उतारा सो वही लोग हैं ज़ालिम" (माइदा–४५)

और जो कोई हुक्म न करे उसके अनुसार जो अल्लाह ने उतारा सो वही लोग हैं अवज्ञा कारी" (नाफ़र्मान) (माइदा– ४६) एक तरफ़ ईमान का दावा और दूसरी ओर अल्लाह व रसूल के क़ानून से गुरेज़ (पलायन) की क़ुर्आन ने कठोर निन्दा की है।

अनुवाद – "क्या तूने देखा जो दअवा करते हैं कि ईमान लाए हैं उस पर जो उतरा तेरी तरफ़ और जो उतरा तुझ से पहले, चाहते हैं कि क़ज़ीया (मुक़दमा) ले जाएं शैतान की तरफ़ हालांकि हुक्म हो चुका है उनको कि इसको न मानें और चाहता है शैतान कि उनको बहका कर दूर जा डाल दे।" (सूरः निसा ६०)

"और जब उनको बुलाए अल्लाह और रसूल की तरफ़ कि उनका आपसी कज़िया (झगड़ा) चुका दे तब ही उन में से एक गिरोह मुंह मोड़ने लगता है।" (सूरः नूर ४८)

गैर मुस्लिम देशों में कज़ा न्याय व्यवस्था की स्थापना।

अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी और आपसी झगड़ों में क़ानूने इलाही को निर्णायक क़रार देने की मांग केवल उन मुसलमानों से नहीं है जो मुस्लिम बहु संख्याई देशों में आबाद हों बल्कि दुन्या के तमाम मुसलमानों से चाहे वह किसी भी देश और धरती के किसी क्षेत्र में रहते हों, चाहे वह बहुसंख्यक (अकसरियत) या अल्प संख्यक (अक़लीयत) हों।

अतः हर देश के मुसलमानों का यह कर्तव्य है कि वह अपने झगड़ों का फैसला कराने के लिए क़ज़ा (शरअ़ी अदालतें) की व्यवस्था क़ाइम करें और क़ाज़ी के फ़ैसले को ख़ुशी ख़ुशी स्वीकार करें। मुसलमानों का इमानी जज़्बा और क़ानूने शरीअत का सम्मान वह ज़बरदस्त शक्ति है जो भौतिक (माद्दी) शक्ति से वंचित होने के बावजूद मुस्लिम समाज इस्लामी शरीअत को लागू करने को यक़ीनी बनाती है। सैय्यिदना उमर फ़ारूक़ ने एक महत्वपूर्ण पत्र में सय्यिदना अबू मूसा अशअ़री रज़ि० को लिखा कि क़ज़ा मज़बूत कर्तव्य और पैरवी करने योग्य सुन्नत है।

मुसलमानों के जीवन में विशेष कर उन की समाजी समस्याओं में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन का फैसला काज़ी ही द्वारा हो सकता है। मसलन यदि शादी के बाद साबित हो कि उन दोनों में ससुराली रिश्ते के सबब या दूध पिलाने के रिश्ते के सबब निकाह हराम था और दोनों सूरतों में पति विवाहित सम्बन्ध समाप्त करने पर तैयार हो या औरत ख़ियारे बुलूग का अधिकार का इस्तेमाल करना चाहे या मफ़क़ूदुलखबर (लापता) व्यक्ति की बीवी अपना निकाह समाप्त करना चाहे तो इन तमाम परिस्थितियों और इन के अतिरिक्त कुछ दूसरी दशाओं में भी इस के सिवा कोई चारा नहीं कि क़ाज़ी का फ़ैसला हासिल किया जाए अन्यथा समाज बदतरीन गुनाहों का घर बन जाएगा। ज़ाहिर है कि ऐसी परिस्थितियों में क़ज़ा की स्थापना एक अनिवार्य आवश्यकता क़रार पाती है जिस के बिना शरीअत का क़ियाम (संस्थापना) सम्भव नहीं इसीलिए हर मुस्लिम समाज के लिये क़ज़ा की व्यवस्था की स्थापना अनिवार्य और ज़रूरी ठहरी।

वर्तमान में मुसलमानों की कम से कम एक तिहाई संख्या उन देशों में आबाद है जहां शासन दूसरों के हाथ में और मुसलमान अल्पसंख्यक के रूप में वहां आबाद हैं, उनमें से बाज़ देश (जैसे हुन्दुस्तान) के मुसलमानों की संख्या बहुत से मुस्लिम बहु संख्यक देशों के मुसलमानों की संख्या से कहीं अधिक है। क्या मुसलमानों की इतनी असाधारण संख्या के लिए इस बात की गुंजाइश है कि वह लोग इस्लाम के अदालती व्यवस्था की अच्छाइयों और बरकतों से वंचित रहें और अपने मुकदमों का फ़ैसला कराने के लिए क़ज़ाऐ शरअ़ी (शरअई अदालतों) की व्यवस्था न करें। जिस व्यक्ति की भी

किताब व सुननत, शरीअ़त के उद्देश्य और फ़ुक़हा (धर्मशस्त्र ज्ञाता) की व्याख्या पर नज़र होगी वह बिना संकोच यही उत्तर देगा कि इस्लाम की इंसाफ़ व्यवस्था से वंचित होना और क़ज़ा की व्यवस्था से विमुख होना किसी देश के मुसलमानों के लिए जाइज़ नहीं।

वर्तमान परिस्थितयों का तक़ाज़ा :

हिन्दुस्तान की वर्तमान परिस्थितियां इस बात की मांग करती हैं कि मुसलमानाने हिन्द कलमे की एकता (इत्तिहादे कलमा) के आधार पर धार्मिक विचारों और फ़िरकों (समुदायों) से ऊपर उठ कर पूरे मुलकी पैमाने पर शरअ़ी संगठन और क़ज़ा की सुचार व्यवस्था शरअ़ी क़ानून की रोशनी में जल्दी से जल्दी क़ाइम कर लें। पूरे देश में दारूल क़ज़ा (शरई अ़दालतों) का जाल बिछा दें ताकि हमारे झगड़े (विशेषकर पर्सनल झगड़े) अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के अ़नुसार निर्णीत (फ़ैसला) हुआ करें। हमारे उत्पीड़ित सताए हुए तबक़े और लोगों (विशेषतः औरतों) को आसानी के साथ कम से कम ख़र्च में इंसाफ़ मिल सके और हिन्दुस्तान की वर्तमान परिस्थितियों में इसलाम के आइली क़वानीन (मुस्लिम पर्सनल लॉ) को जो खतरे मौजूद हैं उन्हें दूर करने में सफलता मिलसके।

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अपने कामों और इजलासों (अधिवेशनों) में दारुल क़ज़ा की स्थापना को विशेष महत्व दिया। बोर्ड के कोलकाता अधिवेशन १९८५, जयपुर अधिवेशन १९९३ हैदराबाद अधिवेशन २००२, मुंगेर अधिवेशन २००३ में दारूल क़ज़ा के बारे में व्यापक प्रस्ताव पारित किये गये। नीचे मुंगेर अधिवेशन का मूल परस्ताव नकल किया जाता है:—

मुसलमान दुन्या में जहां कहीं हों उन पर वाजिब है कि अपने आपसी झगड़ों में अल्लाह और रसूल के हुक्म की तरफ तवज्जुह दें और शरअ़ी तरीके पर अपनी समस्याओं को सुलझाएं। अपने आपसी झगड़ों को हल करने के लिए क़ज़ा की व्यवस्था (निज़ामें क़ज़ा का क़ियाम) मुसलमानों की संयुक्त ज़िम्मेदारी है और इस्लामी शरीअ़त की सुरक्षा की सकार्आत्मक और अ़मली कोशिश भी है। इसी पृष्ठ भूमि में आल इण्डिया पर्सनल लॉ बोर्ड शुरू ही से क़ज़ा व्यवस्था की स्थापना की तरफ़ मुसलमानों का ध्यान आकृष्ट करता रहा है। फिर जयपूर अधिवेशन १९९३ में इस काम को व्यवस्थित करने के लिए प्रस्ताव मंज़ूर किये गए और कनवेनर की नियुक्ति भी की गयी। बिहम्दिलिल्लाह इसके बाद इस काम में और तेज़ी आई लेकिन निज़ामे क़ज़ा की अहमियत और इस देश के विस्तार को देखते हुए ज़रूरत महसूस हुई कि बोर्ड की निगरानी में एक आन्दोलन और मुहिम के तौर पर इस काम के क्षेत्र का विस्तार किया जाए देश के सभी प्रान्तों और उसके अहम ज़िलों और शहरों में इसका विस्तार किया जाए और ख़ुद मुसलमानों में भी शरअ़ी दृष्टिकोण से क़ज़ा व्यवस्था (निज़ामे क़ज़ा) के महत्व और सामाजिक एतबार से इसकी सार्थकता और सामाजिक जीवन में जो नाइंसाफ़ियां शरीअ़ते इस्लामी से लापरवाही के कारण घुस आई हैं उनको दूर करने के लिए इस निज़ाम की ज़रूरत को स्पष्ट किया जाए।

इस उद्देश्य के लिए आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड का यह अधिवेशन :

१.तमाम मुसलमानों से अपील करता है कि वह अपने आप को शरअी आदेशों का पाबन्द बनाएं। इस्लाम में समाजी व ख़ान्दानी ज़िन्दगी में जिन जिन लोगों के अधिकारों (हुकूक) को निर्धारित किया गया है, उनको अदा करने में किसी कोताही से काम न लें और यदि किसी मामले में कोई विरोध या झगड़ा पैदा हो जाए तो दारुल क़ज़ा (शरअ़ी अदालत) और शरअ़ी पंचायत से सम्पर्क करें और जो वहां से फैसले हों उनको स्वीकार करें कि इस में अल्लाह की ख़ुशनूदी और आख़िरत की भलाई भी है ओर माली बोझ से सुरक्षा भी।

२. ख़ुशी की बात है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित दीनी मदरसों ने अपने यहां क़ज़ा का प्रशिक्षण (तर्बियते क़ज़ा) का कोर्स शुरू कर दिया है लेकिन इस विशाल देश की आवश्यकता के लिहाज़ से अभी भी यह संख्या नाकाफ़ी है। इसलिए यह अधिवेशन देश के बड़े बड़े दीनी इदारों के ज़िम्मेदारों से अपील करता है कि वह अपने यहां उमूरे क़ज़ा से सम्बन्धित तालीम और अमली प्रशिक्षण (तर्बियत) का इंतज़ाम करें ताकि हर जगह प्रशिक्षित काज़ी मुहय्या हो सकें।

३. बोर्ड का यह अधिवेशन मुसलमानों की धार्मिक शैक्षिक संस्थाओं और संगठनों और दीनी समितियों के ज़िम्मेदारों, उ़लमा व मशाएख़ और बुद्धिजीवियों से अपील करता है कि वह मकतब व मशरब (अक़ीदे) से ऊपर

उठकर उम्मत के इस सामूहिक दायुत्व को पूरा करने में भरपूर सहयोग करें तथा शरीअ़त की सुरक्षा की इस अ़मली सकारात्मक कोशिश में पूरी सरगर्मियों के साथ शरीक हों और अपने सहयोग द्वारा इसको शक्ति प्रदान करें।

४. इस काम को देश व्यापी विस्तार, इन को आपस में संगठित व मज़बूत करने के लिए माननीय अध्यक्ष महोदय से दरख़्वास्त करता है कि वह इस काम के लिए एक कमेटी और कनवेनर नियुक्ति करें जो बोर्ड की देख रेख में आवश्यकतानुसार अहम क्षेत्रों और शहरों में निज़ामे क़ज़ा (शरअ़ी अ़दालत) की स्थापना की अ़मली कोशिश करे और उनको आपस में जोड़ने की कोशिश करे।

अलहमदुलिल्लाह हिन्दुस्तान के बाज़ प्रान्तों में (मुख्यतः बिहार, उड़ीसा और झारखण्ड) में काफ़ी लम्बे समय से मज़बूत बुन्यादों पर दारूल क़ज़ा क़ाइम है। आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तहरीक (प्रेरणा) ख़ुद बोर्ड की देखरेख में विभिन्न प्रान्तों में दारूल क़ज़ा क़ाइम हुए जो सफलता पूर्वक भली भांति अपना काम सम्पन्न कर रहे हैं और समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल–लॉ बोर्ड जो हिन्दुस्तानी मुसलमानों का संयुक्त पलेटफार्म और विश्वसनीय संस्था है उस ने यह फैसला किया है कि क़ज़ा की व्यवस्था का पूरे देश में बड़े पैमाने पर विस्तार किया जाए और तमाम प्रान्तों और महत्वपूर्ण स्थानों पर काजी मुकर्रर किए जाएं जो मुसलमानों के तमाम झगड़ों विशेष कर खान्दानी झगड़ों का निपटारा करें और मुसलमानों के अन्दर इस्लामी कानून और आदेशों पर अमल करने का जज़्बा पैदा करें।

मुंगेर अधिवेशन मार्च २००३ के फैसले के अनुसार बोर्ड के अध्यक्ष ने दारूल कज़ा कमेटी गठित की और कनवेनर नामज़द किया और इजलासे आमिला (कार्यकारिणी की बैठक) ने इसकी पुष्टि की।इस कमेटी ने अलहम्दुलिल्लाह अपना काम शुरू कर दिया लेकिन इस काम में सफलता उस समय मिल सकती है जब तमाम बोर्ड के सदस्य, मस्जिदों के इमाम और विचारक व बुद्धिजीवी इस काम में भरपूर सहयोग दें विशेषतः उलमा और मस्जिद के इमाम अपनी तकरीरों और खुतबों (अभिभाषणों) के द्वारा यह मिजाज बनाएं कि अपने झगड़े खासतौर से खान्दानी झगड़े दारूल क़ज़ा में लाएं और काज़ी के फैसलों को सच्चे दिल से स्वीकार करें।

आशा है कि तमाम मुसलमान ख़ासकर उलमा, इमाम साहबान, कानून के विशेषज्ञ और समाज के प्रभावशाली लोग इस महत्वपूर्ण दायित्व की अदाएगी में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के साथ हर प्रकार का सहयोग करेंगे।

अनुवाद–हबीबुल्लाह आज़मी

एक सूचना

मौलाना अ़ब्दुल करीम पारीख साहिब के कई मज़ामीन सच्चा राही में छप चुके हैं। इस लिऐ सच्चा राही के पढ़ने वाले मौलाना से वाक़िफ़ हैं। कुर्आन शरीफ़ के मतालिब बयान करने में अल्लाह तआ़ला ने उनको अच्छा मलका दिया है वह दर्से कुर्आन में खासी शुहरत रखते हैं। दर्से क़ुर्आन पर उनके मुकम्मल केसिट हैं। उर्दू और हिन्दी में उनके तर्जुमे किये हुए कुर्आन भी हैं जिन पर मुफ़ीद हाशिये हैं।

आज कल वह बीमार हैं। एक आंख की बीनाई पहले ज़ा चुकी थी दूसरी आंख अभी जल्द ही बनी मगर उस में अभी तक रौशनी न आ सकी।

जनाब मौलाना पारीख साहिब के माननेवालों और उन से तअ़ल्लुक़ रखने वालों का हल्क़ा ख़ासा वसीअ़ (फैला हुआ) है उनसे दरख़्वास्त की जाती है कि वह मौलाना की खैरियत सिर्फ़ फून से मालूम करें और उन की बीनाई के लिए दुआ़ करें, ख़त न लिखें कि जवाब लिखवाने में ज़हमत होती है। सफ़र भी न करें कि मेहमानों को रिसीव करने और ठहराने में दुश्वारी होती है। दुआ़ हर हाल में फ़रमाएं।

अब्दुलग़फ़ूरपारीख व बिरादरान
फोन : ०७१२–२२४२३०७

हमारे इदारे के लोग उन की सिहत की दुआ़ करते हैं। अल्लाह तआ़ला उनकी दीनी खिदमात को जारी रखे।

Anees Ahmad 0522-2242385(S) 2241117(R)
Famous Foot Wear
Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

वर्तमान युग की समस्याओं का हल

(सीरते तैय्यबः की रोशनी में)

लियाक़त अली खां

आज की दुन्या अनगिनत समस्याओं से जूझ रही है। यह समस्याएं आर्थिक भी हैं और राजनीतिक, आचरण सम्बन्धी तथा सामाजिक भी हैं और व्यक्तिगत और सामूहिक भी। यह समस्या कौमी भी है और अन्तर्राष्ट्रीय भी। आंहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सन्देश वर्तमान युग की समस्याओं का मुकम्मल हल है। हुजूर अकरम (सल्ल०) के पवित्र चरित्र (सीरते तैयबः) अपनी जाहिरी और अंतरआत्मा (बातिनी) के विस्तार के लिहाज से एक अन्तर्राष्ट्रीय और विश्वव्यापी (आलमगीर) चरित्र है। यह एक पवित्र व्यक्ति के जीवन की नियमावली ही नहीं बल्कि मानव जाति के लिए हमेशा के लिए मुकम्मल जीवन विधि है। आप का पवित्र चरित्र दुन्या का एक आइना घर है जिस में वर्तमान युग के तौर तरीके का सुधार मौजूद है। मनुष्य आज टेक्नालोजी के बलबूते पर कई मार्के (क्षेत्र) में सफल हो चुका है। लेकिन विभिन्न समस्याओं ने उसे बुरी तरह घेर रखा है। सीरते तैय्यबः (आंहजरत सल्ल० का पवित्र चरित्र) की कंदील का प्रकाश इंसान के हर युग में रास्ता दिखाता रहा है और दिखाता रहेगा।

आर्थिक और समाजी समस्याओं में बढ़ती हुई आबादी निर्धनता, अशिक्षा, बेरोज़गारी, बीमारियां मंहगाई, विदेशी कर्जों की समस्या, आर्थिक दुर्दशा और आर्थिक नाबराबरी क़ाबिले ज़िक्र हैं। वर्गीय संघर्ष और नस्ली भेदभाव, महिलाओं की आजादी की समस्या, खान्दानी व्यवस्था में टूट फूट की प्रक्रिया, शराबनोशी और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नशीले पदार्थों की तस्करी और सेवन, दौलत की रेल पेल और दौड़, रूहानियत (अध्यात्मवाद) से दूरी, आतंकवाद, निराज, करप्शन, मज़हब से विमुखता (बेजारी), नासतिकता (खुदा को न मानना) समाज में असंतोष और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति का अभाव, चरित्र की गिरावट, सांस्कृतिक आक्रमण (कलचरल हमला) और पश्चिम की अन्धी पैरवी ध्यान देने योग समस्याएं हैं। राजनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं संसार के विभिन्न देशों में राजनीतिक अस्थिरता, इस्लामी देशों के खिलाफ दुश्मनी, अल्पसंख्यकों की असुरक्षा का एहसास, दुन्या के विभिन्न क्षेत्रों में जागीरदाना व्यवस्था तथा ऐटमी फैलाव और हथियारों की दौड़ ने असंतोष और बेचैनी पैदा कर दी है।

बढ़ती हुई आबादी की समस्याः

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार बढ़ती हुई आबादी का रूजहान अधिकांश देशों की समाजी और आर्थिक उन्नति और जनकल्याण (अवामी फलाह) में रूकावट पैदा कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आबादी में वृद्धि विकासशील देशों का हिस्सा है। तीसरी दुन्या में आबादी की वृद्धि ३ प्रतिशत सालाना है, हर साल ६५ मिलयन व्यक्तियों की वृद्धि हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय कल्याण संस्था के अनुसार आबादी नियंत्रण की तमाम योजनाओं की सफलता की दशा में भी सन २०३० तक दुन्या की आबादी लगभग दस अरब हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वे के अनुसार दुन्या की अधिक आबादी देहाती क्षेत्रों में रहती है। रोजगार के लिए और बेहतरीन जीवन जीने के लिए शहरों की तरफ पलायन का रूजहान अधिक बढ़ रहा है। २०३० तक देहाती और शहरी आबादी में अनुपात बिल्कुल बदल जाएगा।

जहां तक कि हुजूर (सल्ल०) के जीवनी की रोशनी में आबादी की समस्या का सम्बन्ध है तो हम यह देखते हैं कि कुर्आन हकीम यह उपदेश देता है कि औलाद को गरीबी के भय के कारण कत्ल न करो। टीकाकारों (मुफस्सरीन) के निकट इस्लाम पूर्व लड़कियों को गरीबी और निर्धनता के कारण जिन्दा दफन कर दिया जाता था तथा इससे मुराद गर्भपात (Abortion) भी है। इस्लामी नजरियाती कौंसिल ने भी हमल को गिराना और हमल रोकने की दवाओं और तरीकों को हराम करार दिया। हुजूर की तालीम से भी यह बात साबित है कि रोजी रोटी देने वाला अल्लाह ही है। वही सारे संसार का पालन हार है। इंसानों की नस्ल कुशी किसी लिहाज से इस्लामी तालीम के मुताबिक जाइज नहीं। जहां इन्सानों की आबादी बढ़ रही है वहां नई कृषि पैदावार की किस्मों की जानकारी हासिल हो रही है। ऐसी ऐसी फसलें आ रही हैं जिन की पैदावार कई गुना अधिक है मखलूक़े इंसानी

(खुदा के पैदा किये हुए इंसान) रहमत है यदि उन्हें सही दिशा में लगाया जाए और मंसूबों (योजनाओं) के अनुसार उनसे काम लिया जाये तो इंसानी उन्नति के लिए लाभदायक हो।

ग़रीबी की समस्या :

गरीबी दुन्या की बहुत गम्भीर समस्या है। वर्ल्ड बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार दुन्या के उन्नतिशील देशों के संसाधनों का ८० प्रतिशत सनसाधन तीसरी दुन्या के देश इस्तेमाल में ला रहे हैं। इन पिछड़े हुए देशों में आबादी भी अधिक है। वह गरीबी के मनहूस चक्करों से बाहर नहीं निकल पाते। ये देश साफ पानी, स्वास्थ्य, रक्षा और शिक्षा की सुविधाओं से वंचित रहते हैं। १९६० में तीसरी दुन्या के आबादी का २६.७ प्रतिशत भाग गरीबी की रेखा पर जीवन व्यतीत कर रहा था। तीसरी दुन्या की ६५ प्रतिशत आबादी ऐशिया में है। इस प्रकार भारत, यूथोपिया, पाकिस्तान और सूडान में गरीबी की झलक डेनमार्क, स्वीटजर लैण्ड और स्वेडन जैसे देशों के मुकाबले में भली भांति देखी जा सकती है।

उन्नति प्राप्त देशों ने व्यापारिक और आर्थिक मैदान में अपनी इजारेदारी (एकाधिकार) काइम कर रखी है। उद्योगिक इंक्लाब ने भी यूरोपी देशों में आर्थिक दशा को सुदृढ़ किया। अब सूरत हाल यह है कि उन्नति प्राप्त देश अमीर से अमीरतर होते चले जा रहे हैं और पिछड़े हुए देश गरीब से गरीबतर होते चले जा रहे हैं। यदि हम हुजूर (सल्ल०) की जीवनी की रोशनी में गरीबी की समस्या का हल तलाश करें तो इसका पूरा हल हमें मिलता है। नबीए अकरम ने एक फलाही रियासत (Swelfare State) की बुन्याद रखी जिसका प्रधान उद्देश्य गरीबी के समाप्त करना था। आप (सल्ल०) ने जकात और सदका की व्यवस्था द्वारा गरीबी को जड़ से समाप्त किया । उस समय की आर्थिक सहायता का यह हाल था कि हर व्यक्ति अपने भाई की मदद करता। हुजूर ने जो भाईचारे की व्यवस्था काइम की उस का उद्देश्य यही था कि अपने कमजोर भाई की मदद की जाए ताकि वह अपने पांव पर खड़ा हो जाए। इस्लामी व्यवस्था यदि पूरी तरह क़ाइम हो जाए तो दुन्या से गरीबी समाप्त हो सकती है।

अशिक्षा और जिहालत :

शिक्षा का विस्तार और अज्ञानता की समाप्ति वर्तमान युग की सबसे आवश्यक ज़रूरत है। सभी देश प्रयत्नशील (कोशां) हैं कि उनकी जनता शिक्षा के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाए। संयुक्त राष्ट्र भी अशिक्षा और अज्ञानता के ख़िलाफ़ प्रयत्नशील है।

हुजूरे अकरम (सल्ल०) ने महान शिक्षक बनकर अरब के जाहिल कौमों को ज्ञान व शिल्प (इल्मोफन) से अवगत कराया। आप (सल्ल०) ने इल्म को सदक–ए–जारिया (जारी रहने वाला दान) कहा। इस्लामी शिक्षा व्यवस्था की शुरूआत आप (सल्ल०) ने मदीना मुनव्वरा की हिजरत (प्रस्थान) के बाद किया। आप (सल्ल०) ने मस्जिदे नबवी में एक आवासी विद्यालय (Residential School) की बुन्याद रखी असहाफ़े सुफ्फ़ा (रज़ि०) यहां तालीम हासिल करते थे आगे चलकर यह मुसलमानों के शिक्षक बने। हुजूर (सल्ल०) ने जंगी कैदियों से भी तालीमी ख़िदमत हासिल की। आपने (सल्ल०) महिलाओं की शिक्षा की तरफ़ भी खास ध्यान दिया। असहाफे सुफ्फ़ (रज़ि०) के अतिरिक्त कारोबार करने वाले सहाबएकिराम (रज़ि०) की बड़ी तादाद खाली समय में शिक्षा हासिल करती। यह एक प्रकार की प्रौढ़ (बालिग़ लोगों की) शिक्षा थी। इस्लाम की शिक्षा व्यवस्था से वर्तमान युग में भी लाभ उठाया जा सकता है। इस [illegible] इंसानियत सदाचरण की जानकारी प्राप्त करेगी और चरित्र भी अच्छा हो सकेगा।

बेरोज़गारी :– बेरोजगारी भी इस युग की एक बड़ी समस्या है। आबादी की अधिकता और सीमित सनसाधन और मशीनों ने भी बेरोज़गारी में इज़ाफ़ा किया है।

बेरोज़गारी हुजूर (सल्ल०) के ज़माने में भी थी। गरीबी आम थी और साधन सीमित। हुजूर (सल्ल०) के पास एक बार एक मांगने वाला आया आपने उसको कुछ देने के बजाए उसे रोजगार से लगाने का प्रोग्राम बनाया। हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि०) रवायत करते हैं कि अंसार का एक आदमी मांगने वाले की हैसियत से रसूलुल्लाह के पास आया। आप (सल्ल०) उसे कुछ देने के बजाए उसको अपना प्याला और बिछौना बेचने का हुक्म दिया। दोनों चीजें एक आदमी ने दो दिरहम (चांदी का सिक्का) में खरीद लीं। आप (सल्ल०) ने दिरहम अंसारी को दे दिया और फरमाया कि एक दिरहम से गल्ला खरीदकर घरवालों को दे दो और दूसरे दिरहम से एक कुलहाड़ी खरीद कर लाओ आप (सल्ल०) ने उसकी कुलहाड़ी ली और उसमें मुठिया लगा दी और फरमाया जाओ लकड़ियां काटो और बेचो। मैं तुम्हें पन्द्रह दिन तक न देखूं। वह आदमी चला गया जब वापस आया तो दस दिरहम कमा चुका

था। आप (सल्ल०) ने फरमाया ऐसा (खुद कमाकर खाना) तुम्हारे लिए अच्छा है या इसके मुकाबले में कि कियामत के दिन तुम इस हाल में आओ कि तुम्हारे चेहरे पर दाग़ दिखाई दे ?

इस घटना में नौजवानों के लिए बहुत सीख छुपी हुई है। बेरोजगार नौजवान यदि मेहनत की महानता पर यकीन रखें और कड़ी मेहनत से काम करें तो क़ौमों की दशा सुधर जाएगी।

मंहगाई — आर्थिक भ्रष्टाचार और आर्थिक उत्पीड़न मंहगाई को जन्म देता है। चीज़ों को रोक कर बेचने वाला इसलिए माल को रो कर भण्डारन करता है कि वह चीजें मंहगी करके बेचे। आप (सल्ल०) ने माल को रोक कर बेचने को मना किया है। फरमाया कि माल को रोक कर बेचने वाला लअ़नती है। यदि इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था सही मानों में लागू हो जाए तो कीमतें खुद बखुद बेहतर हो जाएंगी और हर तरफ़ आर्थिक सम्पनन्ता हो जाए। इस्लाम नाजाइज मुनाफा खोरी को मना करता है। आज बड़ी बड़ी संस्थाएं अपनी बनाई हुई चीजों का एकाधिकार रखती हैं और पिछड़े हुए देशों से मुंह मांगा दाम मांगती हैं। यदि इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था लागू हो जाए तो यह एकाधिकार समाप्त हो जाए।

ग़ैर मुल्की सहायता :

विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं वर्ल्ड बैंक और आई.एम.एफ. आदि पिछड़े हुए देशों को सहायता देती हैं। उन देशों में उन्नति क्या खाक हो जो सूद दर सूद इन कर्जों को अदा करते हैं। वह कौमें विदेशी कर्जों में जकड़ी हुई हैं वहा आर्थिक उन्नति भी नहीं हो पाती। कई पिछड़े हुए देश विदेशी कर्जों से परेशान हैं।

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। आपने मांगने से मना फरमाया। अगर संसार के वह देश जो पिछड़े हैं इस उपदेश का पालन करें और विदेशी कर्ज़ा लेना बन्द कर दें और अपने ही साधनों पर निर्भर रहें तो यह अपने आप पर निर्भरता आर्थिक उन्नति ला सकती है। इसकी एक मिसाल चीन की है। चीन ने अपने साधनों का प्रयोग कर के अपनी आर्थिक दशा सुधार ली। जापान और कोरिया ने भी मेहनत करके संसार के उन्नति प्राप्त देशों में अपना स्थान बना लिया है।

सरमायादारान पूंजीपति और सामवादी (जागीरदाराना) व्यवस्था इस युग की एक महत्वपूर्ण समस्या है। यह वर्ग राजनीति पर छाया रहता है। बड़े बड़े जागीदार, जमींदार रोजी के साधनों पर पूरी तरह कब्जा जमाए रखते हैं। गरीब किसानों मजदूरों आदि को गुलाम बना कर रखा जाता है। यह वर्तमान युग की गुलामी है। उद्योगपति गरीब मजदूरों का आर्थिक शोषण करते हैं। यही चन्द पूंजीपति संसार के आर्थिक क्षेत्रों पर कब्जा जमाए हुए हैं अक्सरियत इन की मुहताज है हालांकि क़ुर्आन हकीम में कहा गया है — (अनुवाद) " ऐ बनी नौअ़ इंसान ! (मनुष्य जाति) तुम रोजी के सर चश्मे (स्रोतों) को तमाम इंसानों के लिए खुला रखो (और इसमें से अपनी जरूरतों के अनुसार निहायत खुशगवार (रोचक) तरीके से खाओ पियो) और शैतान के पग चिन्हों पर चलकर व्यक्तिगत हितों के पीछे न लग जाओ) कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (सूरः बक़रा—१६८)

नबी—ए—अकरम (सल्ल०) ने इस्लाम में पूजीवादी व्यवस्था के लिए कोई जगह न छोड़ी। इस्लाम के आर्थिक नियम पूंजीवाद व्यवस्था को पनपने नहीं देते। हुजूर (सल्ल०) ने हलाल रोजी का हुक्म दिया है। सूदी कारोबार को जो पूंजीवादी व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, हुजूर सल्ल० ने हराम करार दिया है। जूए सट्टे की मनाही फ़रमाई है, चोर बाजारी, मालरोक कर भण्डारण, शोषण, नापतौल में कमी और नाजाइज़ मुनाफाख़ोरी को हराम करार दिया है। हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया तिजारत किया करो इसमें रोजी का ६/१० भाग है। सच्चा व्यापारी बरगज़ीदा (शुद्धतात्मा वाले) फरिश्तों के साथ होगा। तिर्मिजी में है " जो शख्स इस गरज़ से गल्ला जमा कर के रोक ले कि भाव बढ़ने पर बेचे तो वह अपराधी है।

सूरः तौबा में बयान किया गया है—

अनुवाद : " और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते तो ऐ नबी! आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बशारत (का शुभसमाचार) दीजिए। जिस दिन कि सोना और चांदी दोजख की आग में गर्म किया जाएगा फिर उस से उनकी पेशानियों (ललाटों) और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगीं और उनसे कहा जाएगा कि वही सोना चांदी है जिसको तुमने जमा कर रखा था सो तुम उस चीज़ का मज़ा चखो जो तुम जमा.करते रहे हो।" (सूरः तौबा—३४,३५)

अनुवाद हबीबुल्लाह आज़मी

परसंतापी सदा दुखी।

समाज सुधार

सदआचरण

मो० हसन अन्सारी

सद्आचरण का मतलब है अच्छा आचरण, अर्थात् सद्व्यवहार, ऐसे क्रिया कलाप और मिलने जुलने के तौर तरीके जो अच्छे हों और जिन्हें व्यवहार में लाने से दोहरी खुशी और मन को शान्ति व सन्तोष प्राप्त होता है, एक अच्छा व्यवहार करने वाले को स्वयं और दूसरे जिसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाये उसे। समझदार लोग कह गये हैं कि चन्दन और इत्र लगाने वाला भी महकता है और जिसे लगाता है वह तो महकता ही है। किसी समाज में सदाचरण करने वालों का जो अनुपात होता है अर्थात उसमें अच्छे व्यवहार करने वाले जितने अधिक लोग होंगे उतना ही अधिक वह समाज सुख–शान्ति, प्रेम व भाई चारे, कल्याणकारी कार्यों और सुख–दुख में एक दूसरे की साझेदारी का समाज होगा और सभ्य समाज कहलायेगा।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ज़न्म से पहले छठवीं शताब्दी में अरब समाज में अनेक बुराइयां फैली हुई थीं, पूरे का पूरा आवां बिगड़ा हुआ था और इन्सानियत एक बहुत गहरे खड (गर्त) के किनारे पहुंच कर आत्म हत्या की आखिरी छलांग लगाने को तैयार खड़ी थी। आप सल्ल० की आमद से उसके पैर एकदम से रूक गये, उसने अपना रूख मोड़ लिया और आपकी तालीम व तर्बियत, शिक्षा–दीक्षा से इन्सानियत को, मानवता को जीने का सलीकः मिला, अच्छाइयों का बोल बाला हुआ, लोग बुराई को बुराई समझने लगे। और उससे बचने लगे। नेकियों की बहार आ गइ।

हजरत मुहम्मद सल्ल० के अन्दर विनम्रता थी, सहृदयता थी, सख्त मिजाजी और तंग दिली से आप को नफरत थी, कोई बुरी बात ज़बान से न निकालते थे, किसी मामले में शोर व हंगामा नहीं करते थे, किसी की ऐब जोई (अवगुण बयान करना और उसकी टोह में रहना) नहीं करते थे, जो बात आप को नापसन्द होती उसकी अनदेखी करते और उस से चश्मपोशी फरमाते, कोई व्यक्ति किसी चीज की उम्मीद रखता और आप से सवाल करता तो उसे निराश न करते। तीन चीजों से आप सल्ल० दूर रहते। (१) बहस व मुबाहिसे से (तर्क–वितर्क) (२) जरूरत से जियादा बातें करने से और (३) जिस मामले से कोई सम्बन्ध न हो उस में दख़ल अन्दाज़ (हस्तक्षेप) होने से।

नबवी इ़लाज

शहद और पेट के रोग

शहद के लाभदायक और शिफ़ा बख़्शी के सम्बन्ध में एक ह़दीस नबवी का अध्ययन कीजिए – ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० बयान करते हैं, एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया– मेरे भाई के पेट में दर्द है या ये कहा कि उसे इस्हाल (दस्त) की शिकायत है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "उसे शहद पिलाओ" वह शख़्स चला गया, मगर फिर लौट कर आया और कहने लगा कि मैंने उसे पिलाया, मगर शहद से कुछ फ़ाइदा नहीं हुआ दो तीन बार ऐसे ही किया, चौथी बार भी आकर उसने शिकायत की कि दस्त आ रहे हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने सच फ़रमाया है झूट है तो तेरे भाई के शिकम (पेट) का है – चुनांचि उस शख़्स ने फिर भाई को शहद पिलाया सो वह शिफ़ायाब हो गया ह़दीस के आख़िरी अल्फ़ाज़ यह हैं :

"उसने उसे शहद पिलाया और उसे सिह़त हो गई। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात)

ग़ौर कीजिए हुज़ूर स०अ० को अल्लाह तआ़ला के कलाम की वजह से शहद की शिफ़ा बख़्शी पर किस क़दर यक़ीन था और आख़िर कार (अंततः) अल्लाह का हुक्म पूरा हुआ – अफ़सोस कि आज हमारे दिलों से यक़ीन और ईमान की दौलत निकल गई है जिसकी वजह से हम बहुत सी नेअ़मतों से महरूम (वंचित) हो गए हैं, हुज़ूर सल्ल० का बार बार इरशाद फ़रमाना कि उसे शहद पिलाओ, इसलिए भी होगा कि इस मर्ज़ के लिये एक ख़ास मिक़दार (विशेष मात्रा) में शहद की ज़रूरत होगी।

अब शहद की विशेषता कैफ़ियत (विवरण) मात्रा पर रिसर्च करना हमारे अतिब्बा (चिकित्सकों) की ज़िम्मेदारी है।

शहद हर महीने में तीन बार

शहद को अ़रबी में असल कहते हैं, फ़ारसी में अंगबीं बंगाली में मधु, गुजराती में मध, सिन्धी में भारवी और अंग्रेजी में हनी बोलते हैं, रंगत के एतबार से शहद दो क़िस्म का होता है, सुर्ख़ी माएल, और सफ़ेद कुछ ज़र्दी माएल, हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लललाहु अ़लैहि वसल्लम

(शेष पृ. ३६ पर)

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *बैंक एक सूदी कारोबार है इस लिए अगर पहले से मक़सद मालूम हो तो खालिस इस मक़सद के लिए कि मकान किराये पर देना जाइज़ है या नहीं ?*

उत्तर : जब यह मालूम नहीं कि यह केवल बैंक के ही लिए लेना चाहता है तो यह जाइज़ नहीं इस लिए कि यह गुनाह में एक तरह का हिस्सा लेना है हां अगर यूं ही किसी ने किराये पर मकान ले लिया और बाद में उसमें बैंक बना दिया गया तो अब उस पर कोई गुनाह का बोझ न होगा इमाम सर्ख़सी (रह०) लिखते हैं।

"मुसलमान ज़िम्मी को कोई घर रिहाइश के लिए दो तो उसमें कोई हर्ज नहीं। फिर चाहे वह उस में शराब पिये, सलीब की पूजा करे या सुअ़र दाख़िल करे तो मुसलमान को उनका कोई गुनाह न होगा, इस लिए कि इसने इस मक़सद के लिए नहीं दिया है। गुनाह किरायादार का अ़मल है और इसके इस अ़मल में मकान मालिक के इरादे को कोई दखल नहीं है। इसलिए इस पर कोई गुनाह नहीं।" (अल्मब्सूत १६/३०६)

प्रश्न . *जाली सर्टिफिकेट लेकर नौकरी करना कैसा है ?*

उत्तर : अफ़सोस है कि आज तालीमी सनदों की भी ख़रीद फ़रोख्त होती है और जाली सर्टिफ़िकेट भी एक कारोबार बन गया है। अगर कोई शख्स ऐसे सर्टिफ़िकेट की बुनियाद पर नौकरी कर ले तो उसकी यह जाल साजी गुनाह कबीरा है। और वह झूठ और धोखा धड़ी के दोहरे गुनाह का मुल्ज़िम है मगर उसकी कमाई हुई आमदनी ह़लाल व जाइज़ है कि यह उस के मेहनत की उजरत है। ऐसा मुमकिन है कि ज़रिया जाइज न हो और आमदनी ह़लाल व जाइज़ हो।

प्रश्न : *किसी सज्दः वाली आयत के टाइप या कम्पोजिंग कर रहे हों तो उसका क्या हुक्म है ?*

उत्तर : रिवायतों से मालूम होता है कि सज्दः तिलावत की दो ही सूरतें होती हैं जिसपर वाजिब होती हैं– एक तिलावत करने वाले पर दूसरे सुनने वाले पर – इस लिए अगर आयत सज्दः की किताबत की जाय या उसे टाइप या कम्पोज़ किया जाय और ज़बान से आयत को पढ़ा न ज़ाय या केवल उसके एक एक ह़र्फ़ को पढ़ा जाए तो सज्दः तिलावत वाजिब न होगा।

"सज्द–ए–तिलावत की ओर निस्बत करने में इस ओर इशारा है कि अगर आयत सज्दः को लिखे या उसके हुरूफ हिज्जे के साथ अदा करे तो उस पर सज्दः तिलावत वाजिब न होगा।

(अल्बहरूर्राइक ३/११८)

प्रश्न : *काग़ज़ से इस्तिंजे का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : आज कल बड़े शहरों में काग़ज़ का इस्तिंजे के लिए इस्तिमाल करने का रिवाज बढ़ता जा रहा है। उलमा ने उसूल के तौर पर इसे मकरूह क़रार दिया है काग़ज़ एक क़ीमती चीज़ है जो इल्म के हिफ़ाज़त का ज़रिया है उसकी इस अहमियत की वजह से कमतर कामों के लिए इस्तिमाल करना बेहतर नहीं कि इसमें निजासत लगाई जाए इसलिए यह मकरूह है।

मगर मजबूरी की ह़ालत में जाइज़ है। अल्लामा शामी ने इस की कराहियत के सबब पर रोशनी डालते हुए लिखा है। "इस लिए कि वह चिकना होता है (जिस से नजासत को और फैल जाने का ख़तरा है) और क़ीमती होना है और इल्म के लिखने का ज़रिया है इस लिए काबिले एहतिराम है।

हां ऐसे काग़ज़ जो खास इसी मक़सद के लिए तैयार किये जाते हैं और वह इस क़ाबिल नही कि उन पर लिखा जाए तो उनके इस्तिमाल में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न – *पेट्रोल के जहां और बहुत से फाइदे हैं उनमें से एक यह भी है कि हमारे जमाने में इसका इस्तिमाल कपड़ों की धुलाई और सफाई आदि के लिए किया जाता है। क्या यह सही है?*

उत्तर : तहारत के सिलसिले में उसूल यह है कि नजासत दो तरह की होती है, एक तो वह ग़ैर महसूस नापाकी जिसे हम न देख सकते हैं न महसूस कर सकते हैं लेकिन चूंकि शरीअ़त इसको नापाकी क़रार देती है, इस लिए हम नापाक कहते हैं जैसे–वुज़ू के तोड़ने वाली चीज़ों के आ जाने की वजह से, पूरा जिस्म नापाक हो जाता है, इस को नजासते हुक्मी और ह़दस व जनाबत भी कहा जाता है। ऐसी नापाकी को दूर

करने के लिए पानी का इस्तिमाल या तयम्मुम ज़रूरी है पानी के बजाए अगर कोई दूसरी बहने वाली चीज़ें जैसे फलों के रस आदि का इस्तिमाल किया जाए तो काफी न होगा।

दूसरे किस्म की नजासतें वह है जो महसूस की जा सकती हैं जैसे, पेशाब, पाख़ाना आदि इन के दूर करने के लिए हर पाक बहने वाली चीज़ से नजासत को दूर करने की सलाहियत रखती हो काफी है।

इस उसूल से यह बात साफ़ हो गई कि पेट्रोल से गुस्ल या वुजू तो हरगिज़ दुरुस्त नहीं लेकिन कपड़े आदि का धोना या किसी भी महसूस निजासत का उसके ज़रिये दूर करना दुरुस्त है इसलिए पानी ज़रूरी नहीं, हर बहती हुई चीज़ काफी है जो हुक्मी तौर से पाक हो।

प्रश्न : *नाखून पालिश का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : नाखून जिस्म के उन हिस्सों में से है जिसे वुजू करते वक्त धोना ज़रूरी है और वुजू करने की जगहों पर किसी सख्त ज़रूरत के बिना ऐसी चीज का लगाना जो पानी को जिस्म तक पहुंचने न दे वुजू दुरुस्त न होगा, वुजू उसी वक्त दुरुस्त या सही होगा जबकि उसे खुरच दिया जाय। इस तरह के पेन्ट जो औरतें नाखून पालिस के नाम से लगाया करती हैं ज़रूरत नहीं है केवल जीनत है। इस लिए वुजू करते वक्त जरूरी होगा कि उन को खुरच कर तह तक पानी पहुंचाया जाए।

अगर उसके नाखून की जड़ से सूखी या गीली मिट्टी चिमटी हुई हो और उस पर से पानी गुजार दिया जाय तो काफी न होगा।

(अलफ़तावा हिन्दीया भाग एक – २)

प्रश्न : *आज कल कुछ बीमारियों में पेशाब के रास्ते में नलकी डाक्टर लोग लगा देते हैं जिससे पेशाब आता रहताहै तो क्या उससे वुज़ू टूट जाता है।*

उत्तर : किसी व्यक्ति का आप्रेशन हो और पेशाब के बाहर निकलने के लिए नलकी लगा दी जाए जिससे पेशाब आता रहे तो उस नलकी से भी पेशाब के आने से वुज़ू टूट जाएगा क्योंकि नजासत उसी खास जगह से निकले या किसी और जगह से, वह हर हाल में वुज़ू को तोड़ने वाली है।

(बिदाया भाग एक १०)

हां अगर लगातार उससे पेशाब आता रहे और रोकने की ताक़त ख़त्म हो जाए तो वह माजूर के हुक्म में होगा और हर नमाज़ के वक्त एक बार वुज़ू करने के बाद जब तक उसके अलावह कोई और वुज़ू के तोड़ने वाली चीज़ पेश न आए या नमाज़ का वक्त न गुज़र जाए, वह वुज़ू उसके लिए काफी होगा।

प्रश्न : *क्या इन्जेक्शन लगाने से वुज़ू टूट जाता है ?*

उत्तर : बाहर से गिज़ा या दवा की सूरत में किसी चीज़ के अन्दर जाने से वुज़ू नहीं टूटता इन्जेकशन पर जिस्म का थोड़ा सा खून लगा रहता है इस मिक्दार में खून का बाहर आना भी वुज़ू को नहीं तोड़ता, इस लिए कि वह इतनी कम मिक्दार में होता है कि बह नहीं सकता इसलिए फुक़हा (मुफ़्ती लोग) कहते हैं कि अगर जिस्म से खून निकले, फिर उसे पोंछ दिया जाए और उसकी मिकदार इतनी कम हो कि न पोंछा जाता तो भी न बहता तो वुज़ू नहीं टूटेगा।

जब घाव से थोड़ा सा खून निकले, फिर उसे पोंछ डाले फिर दोबारा खून निकले और उसे भी पोंछ डाले तो अगर पूरे तौर पर खून की मिक्दार इतनी हो कि पोछा हुआ खून छोड़ देने की सूरत में बह जाता, तो वुज़ू टूट जाएगा, वरना नहीं। हां अगर इंजेक्शन का इरादा ही खून निकालने का हो तो उसकी वजह से वुज़ू टूट जाएगा। (फ़तावा हिन्दीया भाग एक–६)

प्रश्न : *बनावटी दांत के निकालने से क्या वुज़ू टूट जाता है ?*

उत्तर : बनावटी दांत दो तरह के होते हैं एक वह जो बाक़ायदा लगाए जाते हैं और फिर उसको आसानी से निकाल लिया जाता है। दूसरे वह जो बनाए ही इस तरह जाते हैं कि ज़रूरत के अनुसार इस्तिमाल किया जाए और जब चाहे निकाल लें।

पहली सूरत में यह बनावटी दांत असल दांत का दर्जा रखते हैं इस लिए इन का हुक्म असल दांतों ही का होगा। वुज़ू में उन दांतों तक पानी पहुंचाना मसनून होगा। और गुस्ल में फर्ज़, दांत निकालने और तह तक पानी पहुंचाने की ज़रूरत नहीं। यही वजह है कि उलमा ने इस तरह के दांत लगाने या दांतों को सोने चांदी के तारों से कसने की इजाज़त दी है। (दुर्रे मुख़्तार भाग ५–२१८)

दूसरी सूरत में उसकी हैसियत एक ज़ायद चीज़ की होगी, अर्थात गुस्ल उसी वक्त दुरुस्त हो सकेगा जब उसको निकाल कर अस्ल जिस्म तक पानी पहुंच जाए अगर ऐसा न किया गया तो गुस्ल दुरुस्त न होगा।

और चूंकि वुज़ू में कुल्ली करना सुन्नत है और उलमा के नज़दीक़ कुल्ली से मक़सद पूरे मुंह में पानी पहुंचाना है इसलिए इसको निकाले बिना कुल्ली करने की सुन्नत अदा नहीं हो पायेगी। (फतावा हिन्दीया भाग एक – ६)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि०)

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली पत्नी)

आफ़रीन इद्रीस फ़ारूक़ी

हज़रत खदीजा (रज़ि०) खान्दानी नसब– हज़रत खदीजा बिन्ते ख्वैलिद बिन असद बिन अब्दुल उज्जा बिन कुसई, इस पर पहुंच कर इनका खानदान रसूल (सल्ल०) के ख़ानदान से मिल जाता है, इनकी मां का नाम फ़ातिमा बिन्ते ज़ायदा था, हज़रत ख़दीजा के बाप अपने खानदान में इज्ज़तदार व्यक्ति थे, मक्का में आकर रूके और यहीं फ़ातिमा बिन्ते ज़ायदा से निकाह किया जिनसे आमुल फ़ील से पन्द्रह साल बाद हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) पैदा हुईं।

जवानी को पहुंचीं तो अपने अच्छे व्यवहार की बिना पर ताहिरा के नाम से मशहूर हुईं।

बाप ने उनकी अच्छाई को देखते हुए शादी के लिए वरका बिन नौफल को, जो उनके भाई के बेटे और तौरात व इंजील के बहुत बड़े आलिम थे, चुना परन्तु यह शादी किसी वजह से न हो सकी और अबू हाला बिन बनाश तमीमी से निकाह हो गया।

अबू हाला के बाद अतीक़ बिन आबिद मखजूमी के निकाह में आयीं।

इसी ज़माने में हर्बुल फुजार शुरू हुई, जिसमें हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के बाप लड़ाई के लिए निकले और मारे गये, यह आमुलफील से बीस साल बाद का क़िस्सा है।

बाप और पति के मरने से हजरत ख़दीजा (रज़ि०) को बहुत परेशानी हुई, रोज़ी रोटी तिजारत थी जिसकी कोई देखभाल करने वाला न था, वह अपने रिश्तेदारों को रूपया देकर माले तिजारत भेजती थीं, एक बार माल जाने का समय आया तो अबू तालिब ने मुहम्मद (सल्ल०) से कहा कि तुम को खदीजा (रज़ि०) से जाकर मिलना चाहिए, उनका माल शाम जाएगा, अच्छा होता कि तुम भी साथ जाते, मेरे पास रूपया नहीं है, वरना मैं खुद तुम्हारे लिए सामान कर देता।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) अमीन के नाम से पूरे मक्के में मशहूर थे और आपकी सच्चाई, ईमानदारी और अच्छे व्यवहार का चर्चा था, हज़रत खदीजा (रज़ि०) को इसकी खबर मिली तो जल्द ही बुला भेजा कि "आप (सल्ल०) मेरी तिजारत का माल लेकर शाम को जाएं, जो रूपया मैं दूसरों को देती हूं आप को इसका दुगना दूंगी।" हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कबूल फ़रमा लिया और माले तिजारत लेकर मैसरह खदीजा (रज़ि०) का नौकर के साथ रह गये, इस साल का फायदा पिछले साल के मुकाबले में दो गुना था।

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की माल व दौलत और अच्छे व्यवहार ने तमाम कुरैश को अपनी ओर आकर्षित कर दिया था और हर व्यक्ति उनसे निकाह करने का ख्वाहिशमन्द था परन्तु हुजूर (सल्ल०) माले तिजारत लेकर शाम से वापस आए तो हज़रत खदीजा (रज़ि०) ने शादी का संदेश भेजा, यह संदेश नफीसा बिन्ते मनाया (यअ़ला बिन उमय्या की बहन) पहुंचाई, आप (सल्ल०) ने कुबूल फ़रमा लिया। और शादी की तारीख निश्चित हो गयी, हज़रत खदीजा (रज़ि०) के बाप का इन्तिक़ाल हो गया था, उनके चचा उमर बिन असद ज़िन्दा थे, औरतों को अरब में यह आज़ादी मिली हुई थी कि शादी ब्याह के बारे मे खुद बात–चीत कर सकती थीं, इसी बिना पर हज़रत खदीजा (रज़ि०) ने चचा के होते हुए खुद सारा इन्तिज़ाम किया।

शादी वाले दिन अबू तालिब और तमाम खानदान के लोग जिनमें हज़रत हम्ज़ा (रज़ि०) भी थे, हज़रत खदीजा के घर आए, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने भी अपने खानदान के कुछ बड़ों को इकट्ठा किया था, अबू तालिब ने खुत्ब–ए–निकाह पढ़ा, अम्र बिन असद की सलाह से ५०० (पांच सौ) दिरहम महर निश्चित हुआ और खदीजा ताहिरा (रज़ि०) नबी की बीवी होकर उम्मुल मोमिनीन में शामिल हुईं, उस समय मुहम्मद (सल्ल०) पचीस साल के थे और हज़रत खदीजा (रज़ि०) की उम्र चालीस साल की थी, यह नुबूवत से पन्द्रह साल पहले का क़िस्सा है।

पन्द्रह साल के बाद जब मुहम्मद (सल्ल०) रसूल हुए और फ़रायज़े नुबूवत को अदा करना चाहा तो सबसे पहले हजरत ख़दीजा (रज़ि०) को यह संदेश

सुनाया, वह सुनने से पहले मोमिन थीं, क्योंकि उनसे ज्यादा आप (सल्ल०) के सच्चाई के दावा का कोई व्यक्ति फैसला नहीं कर सकता था, सही बुख़ारी बाब बदअल वह्य में यह क़िस्सा विस्तार के साथ मौजूद है और वह यह है।

हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर वह्य की शुरूआत सच्चा ख्वाब से हुई, आप (सल्ल०) जो कुछ ख्वाब में देखते थे सवेरे की सफेदी की तरह प्रकट हो जाता था, उसके बाद आप एकान्त में रहना पसंद करते, अतः खाने पीने का सामान लेकर गारे हिरा (पहाड़ की खो) में तशरीफ़ ले जाते और वहीं इबादत करते थे, जब सामान खत्म हो चुकता तो फिर खदीजा (रज़ि०) के पास तशरीफ लाते और फिर वापस जा कर एक अल्लाह की ओर मग्न हो जाते यहां तक कि एक दिन फ़रिश्त–ए–गैब नज़र आया कि आप से कह रहा है पढ़, आप ने फ़रमाया, मैं पढ़ा लिखा नहीं उसने जोर से दबाया फिर मुझको छोड़ दिया और कहा पढ़ तो मैंने फिर कहा, मैं पढ़ा हुआ नहीं, फिर उसने दोबारा जोर से दबाया और छोड़ दिया और कहा पढ़, फिर मैंने कहा मैं पढ़ा हुआ नहीं, इसी तरह तीसरी बार दबाकर कहा पढ़, "उस अल्लाह का नाम लेकर जिसने सारी दुनिया को पैदा किया," जिसने आदमी को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, कहा पढ़ तेरा अल्लाह करीम (दयालु) है।"

मुहम्मद (सल्ल०) घर तशरीफ़ लाए तो अल्लाह के जलाल से पूरी तरह सहमे हुए थे, आप (सल्ल०) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से कहा मुझ को कपड़ा उढ़ाओ मुझको कपड़ा उढ़ाओ लोगों ने कपड़ा उढ़ाया तो दहशत (डर) कम हुई फिर हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से पूरा क़िस्सा बयान किया और कहा, "मुझको डर है" हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने कहा आप चिन्तित न हों, अल्लाह आप का साथ न छोड़ेगा क्योंकि आप सिल–ए–रहिमी करते हैं, बेसहारों और फक़ीरों के मददगार रहते हैं, मेहमान नवाजी और मुसीबत में हक की मदद करते हैं, फिर वह आप को अपने चचा जाद भाई वरक़ा बिन नौफल के पास ले गयीं जो धर्म में नसरानी थे इबरानी ज़बान जानते थे और इबरानी ज़बान में इंजील लिखा करते थे, अब वह बूढ़े और अन्धे हो गये थे, खदीजा (रज़ि०) ने कहा कि अपने भतीजे (मुहम्मद सल्ल०) की बातें सुनो, बोले इब्ने अख़ (मेरे भाई के बेटे) तुम ने क्या देखा है? मुहम्मद (सल्ल०) ने किस्सा की हक़ीक़त बयान की तो कहा यह वही नामूस है जो मूसा (अलैहि०) पर उतरा था काश, मुझमें उस समय ताकत होती और जिन्दा रहता जब आप की कौम आप को शहर से निकाल देगी मुहम्मद (सल्ल०) ने पूछा कि क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने जवाब दिया हां, जो कुछ आप पर नाज़िल हुआ जब किसी पर नाज़िल होता है तो दुनिया उसकी दुश्मन हो जाती है और अगर मैं उस समय तक जिन्दा रहा तो तुम्हारी पूरी मदद करूंगा उसके बाद वरका का बहुत जल्द इन्तिकाल हो गया और वह्य कुछ दिनों के लिए रूक गयी।

उस समय तक पांचों वक्त की नमाज़ फ़र्ज़ न थी, मुहम्मद (सल्ल०) नवाफ़िल पढ़ा करते थे, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) भी आप के साथ नवाफ़िल पढ़ा करती थीं, इब्ने सअ़द कहते हैं।

रसूल (सल्ल०) और खदीजा (रज़ि०) एक जमाना तक (चुपके–चुपके) नमाज़ पढ़ा करते थे।

अफ़ीफ़ कन्दी सामान ख़रीदने के लिए मक्का आए और हज़रत अब्बास (रज़ि०) के घर में रूके सुबह के समय एक दिन कअ़बः की ओर देखा कि एक नवजवान आया और आसमान की ओर देख कर कअ़बः की ओर मुंह करके खड़ा हो गया, फिर एक लड़का उसकी दाईं ओर आकर खड़ा हुआ, फिर एक औरत दोनों के पीछे खड़ी हुई, नमाज़ पढ़ कर यह लोग चले गये तो अफ़ीफ़ ने हज़रत अब्बास (रज़ि०) से कहा कोई आलीशान किस्सा सामने आने वाला है, हज़रत अब्बास (रज़ि०) ने जवाब दिया हां, फिर कहा जानते हो यह नवजवान कौन है? यह मेरा भतीजा मुहम्मद (सल्ल०) है, यह दूसरा भतीजा अली (रज़ि०) है और यह मुहम्मद (सल्ल०) की पत्नी (खदीजा रज़ि०) है, मेरे भतीजे का ख्याल है कि उसका धर्म सारी दुनिया के पालनकर्ता अर्थात अल्लाह का धर्म है, और वह जो कुछ करता है उसी के हुक्म से करता है।

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने केवल नुबूवत की तस्दीक (पुष्टि) ही नहीं की बल्कि शुरू में मुहम्मद (सल्ल०) की सबसे बड़ी मददगार बनी, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को जो थोड़े साल तक मक्का के काफिर तकलीफ देते हुए हिचकिचाते थे उसमें बड़ी हद तक हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) का असर काम कर रहा था जो ऊपर गुजर चुका है शुरू में नुबूव्वत मिल जाने के बाद जब

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़बान से यह शब्द निकले कि "मुझको डर है" तो उन्होंने कहा, "आप चिन्तित न हों, अल्लाह आप का साथ न छोड़ेगा।" दअ़वत देने के बारे में जब मुश्रिकीन (इस्लामी दुश्मन) ने आप को तरह–तरह की तकलीफें पहुंचायीं तो हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने आप को तसल्ली दी, इस्तिआ़ब में है :–

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मुश्रिकीन के इनकार करने और झुठलाने से जो भी तकलीफ पहुंचती, हज़रत खदीजा (रज़ि०) के पास आकर दूर हो जाती थी क्योंकि कि वह आपकी बातों की तस्दीक़ करती थीं और मुश्रिकीन के मामले को आप (सल्ल०) के सामने हल्का कर के पेश करती थीं। सन् ७ नबवी में जब कुरैश ने इस्लाम के तबाह करने का फैसला किया तो यह तद्बीर सोंची कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके खानदान को एक घाटी में इकट्ठा किया जाए, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) भी साथ आयीं, सीरत इब्ने हिशाम में है।

"और वह मुहम्मद (सल्ल०) के साथ शेबे अली तालिब में थीं।"

तीन साल तक बनू हाशिम ने इस तरह की मुसीबत में गुज़ारा किया, यह ज़माना ऐसा सख़्त गुज़रा कि पत्ते खा–खा कर रहते थे, इस ज़माने में भी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के असर से कभी–कभी खाना पहुंच जाता था, अतः एक दिन हकीम बिन हिजाम ने जो हज़रत खदीजा (रज़ि०) का भतीजा था, थोड़े से गेहूं अपने गुलाम के हाथ हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के पास भेजे। रास्ते में अबू जहल ने देख लिया और छीनना चाहा, तो अचानक अबुल बख़्तरी कहीं से आ गया, वह भी काफ़िर था लेकिन उसको रहम आया, अबू जहल से कहा एक व्यक्ति अपनी फूफ़ी को कुछ खाने के लिए भेजता है तू क्यों रोकता है।

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) निकाह के बाद पचीस साल तक जिन्दा रहीं और ग्यारह रमज़ान सन दस नबवी (हिज़रत के तीन साल बाद) इन्तिक़ाल किया, उस समय उनकी उम्र चौंसठ साल छे माह की थी, अतः नमाज़े जनाजः उस समय तक फर्ज नही हुई थी, इसलिए उनकी लाश उसी तरह दफन कर दी गयी।

मुहम्मद (सल्ल०) खुद उनकी कब्र में उतरे और अपने सबसे बड़े रंज व गम में साथ देने वाली को कब्र को सौंप दिया, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की कब्र हुजून में है।

हजरत खदीजा की मौत से तारीखे इस्लाम में नया दौर शुरू हुआ यही जमाना है कि इस्लाम का बड़ा सख़्त जमाना है और खुद मुहम्मद (सल्ल०) इस साल को आमुलहुज्न (गम का साल) फ़रमाया करते थे, क्योंकि उनके उठ जाने के बाद कुरैश को किसी व्यक्ति का डर नहीं रह गया था और अब वह बहुत बेरहमी और बेझिझक मुहम्मद (सल्ल०) को सताते थे, इसी जमाना में आप पहले मक्का से नाउम्मीद होकर ताइफ तशरीफ़ ले गये थे।

हज़रत ख़दीजा (रजि०) के बहुत सी औलादें हुई, अबू हाला से जो उनके पहले शौहर थे दो लड़के पैदा हुए जिनके नाम हाला और हिन्द थे, दूसरे शौहर अर्थात् अतीक़ से एक लड़की पैदा हुई उसका नाम भी हिन्द था, इस तरह आप (सल्ल०) के छः औलादें हुई।

हज़रत क़ासिम (रजि०), मुहम्मद सल्ल० के सबसे बड़े बेटे थे, मक्का में इन्तिक़ाल हुआ, उस समय यह पैरों से चलने लगे थे।

२. हज़रत जैनब (रज़ि०), मुहम्मद (सल्ल०) की सब से बड़ी बेटी थीं।

३. हज़रत अब्दुल्लाह ने बहुत कम उम्र पाई, अतः यह ज़मान–ए–नुबूवत में पैदा हुए थे इसलिए तय्यब और ताहिर के नाम से मशहूर हुए।

४. हज़रत रुक़य्या

५. उम्मे कुलसूम

६. हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०)

इन सब में एक–एक साल का अन्तर था, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) अपनी औलाद को बहुत चाहती थीं और दुन्या ने भी साथ दिया था, अर्थात मालदार थीं, इसलिए उक्बा की लौंडी सलमा को बच्चों की परवरिश पर तय किया था जो उनको खिलाती और दूध पिलाती थीं।

अज़वाज मुतहहिरात (पत्नियों) में हज़रत ख़दीजा को बाज़ ख़ास विशेषताएं हासिल हैं, वह मुहम्मद (सल्ल०) की पहली बीवी (पत्नी) हैं, वह जब मुहम्मद (सल्ल०) के निकाह में आयीं तो उनकी उम्र चालीस वर्ष की थी परन्तु मुहम्मद (सल्ल०) ने उनकी ज़िन्दगी में दूसरी शादी नहीं की, हजरत इब्राहीम (रज़ि०) के सिवा मुहम्मद (सल्ल०) की तमाम औलाद उन्हीं से पैदा हुईं।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की इज़्ज़त व बड़ाई का अन्दाजा इससे हो सकता है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने फर्जे नबूवत अदा करना चाहा तो अल्लाह की ओर से

एक आवाज़ भी आप की बुराई में न उठी। कोहे–हिरा, वादिये अरफ़ात, जब्ले फारान, यहां तक कि तमाम अरब आपकी आवाज़ पर ध्यान नहीं दे रहे थे। लेकिन इस खामोशी में केवल एक आवाज़ थी जो सारे मक्का में जान पैदा कर रही थी, यह आवाज़ हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ताहिरा के दिल मुबारक से ऊंची थी।

हज़रत खदीजा (रज़ि०) वह पाकीज़ा औरत हैं, जिन्होंने नुबूवत से पहले ही बुतों की पूजा छोड़ चुकी थीं, मुसनद बिन हम्बल में रिवायत है कि "मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से फ़रमाया, खुदा की क़सम! मैं कभी लात व उज्जा की पूजा न करूंगा। उन्होंने जवाब दिया कि लात को जाने दीजिए, उज्जा को जाने दीजिए, अर्थात उनका ज़िक्र भी न कीजिए। मुहम्मद (सल्ल०) ने जब नुबूवत की आवाज़ बुलन्द की तो सब से पहले उन्होंने लब्बैक (अर्थात आपकी बात को सच) कहा, मुहम्मद (सल्ल०) और इस्लाम को उनकी जात से जो मज़बूती थी, वह सीरते नबवी (सल्ल०) के एक–एक पेज से जाहिर है, इब्ने हिशाम में है।

वह इस्लाम के बारे में मुहम्मद (सल्ल०) की सच्ची मुशीरकार (सलाहकार) थीं।

मुहम्मद (सल्ल०) से उनको जो मुहब्बत थी वह इस बात का पता देती है कि माल व दौलत होने के बावजूद भी मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत खुद करती थीं, बुख़ारी की एक रिवायत में है कि एक बार हज़रत जिब्राईल (अलैहि) ने मुहम्मद (सल्ल०) से अर्ज किया कि ख़दीजा (रज़ि०) बरतन में कुछ ला रही हैं, आप उनको अल्लाह का और मेरा सलाम पहुंचा दीजिए।

मुहम्मद (सल्ल०) को हज़रत जैद बिन हारसा (रज़ि०) से बहुत मुहब्बत थी, परन्तु वह मक्का में गुलाम की हैसियत से रहते थे, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने उनको आज़ाद किया और अब वह किसी दुनियावी रईस (मालदारों) के ख़ादिम (नौकर) होने के बजाए शहनशाहे रिसालत (मुहम्मद सल्ल०) के गुलाम थे।

मुहम्मद (सल्ल०) की भी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से बेहद मुहब्बत थी आपने उनकी जिन्दगी तक दूसरी शादी नहीं की, उनकी मौत के बाद आपका नियम था, जब घर में कोई जानवर जब्ह होता तो आप ढूंढ़–ढूंढ कर उनकी सहेलियों के पास गोश्त भिजवाते थे, हजरत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि मैंने खदीजा (रज़ि०) को नहीं देखा लेकिन मुझको जिस क़दर उन पर रश्क आता था किसी और पर नहीं आता था, जिसकी वजह यह थी कि मुहम्मद (सल्ल०) हमेशा उनका जिक्र किया करते थे, एक बार मैंने उस पर आप को दुखी किया, लेकिन आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह ने मुझको उन की मुहब्बत दी है।"

एक बार हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के इन्तिक़ाल के बाद उनकी बहन हाला मुहम्मद (सल्ल०) से मिलने आयीं और अदब की वजह से अन्दर आने की इजाज़त मांगी, उनकी आवाज़ हज़रत खदीजा (रज़ि०) से मिलती थी आप (सल्ल०) के कानों में आवाज़ पड़ी तो हज़रत ख़दीजा याद आ गयीं और आप चौंक उठे और फ़रमाया, "हाल होंगी।" हज़रत आइशा भी थीं, उनको बहुत रश्क हुआ, बोलीं कि आप क्या एक बुढ़िया को याद किया करते हैं जो मर चुकी और अल्लाह ने उनसे अच्छी आपको बीवियां (पत्नियां) दीं उसके जवाब में मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, कभी नहीं जब लोगों ने मेरे खिलाफ़ आवाज़े उठायीं तो उन्होंने तस्दीक की, जब लोग काफ़िर थे तो वह इस्लाम लायीं, जब कोई मेरा मददगार न था तो उन्होंने मेरी मदद की।" और मेरी औलाद उन ही से हुई, सही बुख़ारी और मुस्लिम में है। :

सारे आलम (संसार) में अफ़ज़ल तरीन (सर्वश्रेष्ठ) औरत मरयम (अलैहि) और ख़दीजा (रज़ि०) हैं।

एक बार हजरत जिब्रईल (अलैहि०) मुहम्मद (सल्ल०) के पास बैठे हुए थे हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) आयीं तो फ़रमाया –

इनको जन्नत में एक ऐसा घर मिलने की बशारत (खुशखबरी) सुना दीजिए जो मोती का होगा और जिसमें शोर व गुल और मेहनत व मशक्कत न होगी।

□□□

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

इस्मे अअ़ज़म से दुआ़

अबू मर्गूब

बिल्क़ीस का तख़्त हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास पलक झपकते में आ गया। एक अ़िफ़्रीत जिन्न ने सुलैमान (अ़०) से कहा था कि "उस तख़्त को मैं आप के अपनी जगह से उठने से पहले ही हाज़िर कर दूंगा, मैं क़वी भी हूं और अमीन भी (बलिष्ठ एवं विश्सनीय) लेकिन जिसके पास किताब का इ़ल्म था उसने कहा मैं तो उसे पलक झपकते में हाज़िर कर सकता हूं और हाजिर कर दिया ।

जैसा कि क़ुर्आन मजीद में है कि:

"जिसके पास किताब का इ़ल्म था उसने कहा कि मैं उसको आपके सामने आपकी आंख झपकने से पहले लाये देता हूं बस जब सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) ने उस को अपने सामने रखे देखा तो (ख़ुश होकर) कहने लगे कि यह भी मेरे परवर दिगार का एक फ़ज़्ल है ता कि वह मेरा इम्तिहान ले कि में शुक्र करता हूं या (ख़ुदा न ख़्वास्ता) ना शुक्री करता हूं। और (ज़ाहिर है कि जो शख़्स) शुक्र करता है वह अपने ही भले के लिए शुक्र करता है और जो ना शुक्री करता है तो मेरा रब ग़नी है करीम है। (२७:४०)

वह किताब का इ़ल्म क्या था ? इस बारे में इब्नि अ़ब्बास, मुजाहिद, क़तादा बल्कि जमहूर का क़ौल है कि वह इस्मे अअ़ज़म था।

मुजाहिद का क़ौल है कि वह कलिमा "या ज़लजलालि वल् इक्राम था। (इब्नि कसीर व ज़ादुलमसीर) इब्नुस्साइब का कहना है वह कल्मा "या ह़य्यु या क़य्यूम था (ज़ादुल मसीर), इमाम जुहरी का कहना है कि उन्होंने यह दुआ़ की थी" या इलाहना व इलाह कुल्लि शैइन इलाहंव्वाहिदल्ला इलाह इल्ला अन्त इअ़तिनी बिअ़र्शिहा (तबरी) और रूहुल मआ़नी में है कि इबरानी ज़बान के कलिमात थे, आहियन व शराहियन, यह भी कहा गया है कि अल्लाहुर्रह़मान से दुआ़ की गयी थी। इन बातों से यह पता चला कि बिल्क़ीस का तख़्त मंगवाने के लिये जो पढ़ा गया वह मुतअ़य्यन (निश्चित) नहीं है। चाहे वह अल्लाह तआ़ला के मुबारक नामों में से कोई नाम हो जिसे इस्मे अअ़जम कहा गया हो या कोई और मस्नून दुआ़ हो मगर यह ज़रूरी नहीं कि किसी को वह इस्म या दुआ़ मा़लूम हो जाए तो वह भी उसे पढ़ कर वैसा ही हैरत अंगेज़ (आश्चर्यजनक) काम कर ले जैसा सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के सामने ज़ाहिर हुआ। हां यह कहा जा सकता है कि अगर कोई रोक न हो (जैसे दुआ़ करने वाला अगर ह़राम से नहीं बचता है, यह दुआ़ के लिए एक रोक है कोई शख़्स कतअ़े रहिमी क़रता है या़नी रिश्तेदारों से नाता तोड़ लेता है उनके साथ अच्छा बरताव नहीं बरतता, लोगों के ह़क़ मार लेता है यह काम भी दुआ़ क़ुबूल होने में रूकावट बनते हैं ग़रज़ कि (तात्पर्य यह कि) इस तरह़ की रूकावटें न हों) और दिल से दुआ़ मांगी जाए और दुआ़ के अल्फ़ाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिखाए हुए हों या़नी दुआ ह़दीस की हो तो उसकी क़बूलियत यक़ीनी है। लेकिन दुआ़ की क़बूलियत को इस ह़दीस की रौशनी में समझना चाहिए।

अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) ने रिवायत किया है कि कोई मुसलमान अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता है जब कि नाता तोड़ने की दुआ़ न हो या किसी भी गुनाह की दुआ़ न हो तो अल्लाह तआ़ला उस को तीन चीज़ों में से एक चीज़ ज़रूर अ़ता फ़रमाता है या वह वही पाता है जो मांग रहा होता है। या उसको मह़फ़ूज़ कर के उस का बदला आख़िरत (परलोक) में देता है, या दुआ़ में मांगी हुई चीज़ न दे कर उसकी कोई मुसीबत (विपत्ति) टाल देता है। (मुस्नद इमाम अह़मद बिन ह़ंबल)

बा़ज़ वाकिआ़त जो इस तरह़ के हैं कि दुआ़ करने वाले ने पहले ही से कह दिया कि अल्लाह तआ़ला वही अ़ता फ़रमाएंगे जो मांगा जा रहा है जैसे तख़्त वाले वाक़िअ़े में इफ़्रीत जिन और किताब के इ़ल्म वाले ने कहा तो यह वह सूरतें हैं जिन में दुआ़ करने वाले को वह़य या इल्हाम से इशारा दे दिया जाता है कि इन अल्फ़ाज़ से दुआ़ करो बिजिन्सिही (उसी तरह़) क़बूल होगी। इसी तरह़ ह़ज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ को समझा जा सकता है।

कभी किसी अल्लाह वाले पर अल्लाह तआ़ला के ख़ुसूसी करम का ऐसा ग़ल्बा हो जाता है कि वह मस्त होकर कहने लगता है कि ऐसा होगा। अल्लाह तआ़ला अक्सर अपने ऐसे ख़ास बन्दों के ऐसे दअ़वों को पूरा कर दिखाते हैं इस को भी अल्लाह वाले की करामत से ता़बीर किया जा सकता है।

आसिफ़ अंज़ार

हज़रत ज़करिया अ० और हज़रत यहया अ० के बाद हजरत ईसा अ० का जमाना आया हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले के आप रसूल हैं ईसा अ० की कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें अल्लाह तआला की जबर दस्त कूवत और उसकी महान ताकत जाहिर होती है इस कहानी से ये भी प्रकट होता है कि ब्रह्माण्ड में अल्लाह ही एक मात्र ऐसी शक्ति है जिसको उसके इरादे से कोई रोक नहीं सकता इस कहानी से अल्लाह के इल्म और उसकी हिकमत भी जाहिर होती है ये सारी कथा चमत्कारी और अन्होनी बातों पर आधारित है परन्तु ईश्वरीय शक्ति उससे कहीं महान है वो अपनी शक्ति से इस प्रकार की सैकड़ों प्राकृतिक घटनाएं घटाने की क्षमता रखता है हज़रत ईसा अ० का जन्म चमत्कार की तरह हुआ जिसने बुद्धिमानों को दंग कर दिया जिसमें प्राकृतिक नियमों को उलट–पलट दिया जो प्राकृतिक नियमों को ईश्वर की महा बलि समझते हैं जो अपने अनुभव अपने प्रयोग और चिकित्सा नियमों और भौतिक नियमों को अटल और कभी न बदलने वाला समझते हैं और जो अल्लाह की उस ताकत से अज्ञानी हैं जो हर चीज को घेरे हुए है और उसका राज हर चीज पर कायम है उसके इरादे को दुनिया का कोई नियम और कोई कानून बदल नहीं सकता उनके लिए ईसा अ० चमतकारी जन्म को मानना बहुत कठिन हो गया लेकिन अल्लाह फरमाता है कि ईश्वर का मामला तो ये है कि "जब वो किसी कार्य का इरादा करता है तो कहता है हो जा, तो वो हो जाता है।" ईसा अ० के इस चमतकारी जन्म पर ईमान लाना उन लोगों के लिए बड़ा आसान था जो अल्लाह तबारक तआला को महाशक्ति मानते थे और वे अल्लहा को सृष्टि का रचयिता मानते थे। वही खुदा (तमाम मखलूक का) पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उसके सब अच्छे नाम हैं, जितनी चीजें आसमानों और जमीनों में हैं, सब उसकी तस्बीह करती हैं और वह गालिब हिकमत वाला है" तो मोमिन बन्दे जो हज़रत आदम अ० के पानी और मिट्टी से पैदा किये जाने पर ईमान रखते थे। और इस बात पर ईमान रखते थे कि आदम अ० की पैदाईश बिगैर मां, बाप के हुई उनके लिए किसी बिगैर बाप के बच्चे की पैदाइश पर ईमान लाना जियादा आसान है इसी लिए अल्लाह ने कहा "ईसा अ० की मिसाल अल्लाह के नजदीक आदम की तरह है जिनको अल्लाह ने मिटटी से पैदा किया और मिट्टी से बनाया फिर उससे कहा "हो जा तो वो हो गई।"

उनका सारा मामला ही विचित्र है

ईसा अ० की कथा की सारी चीज़ें अदभुत हैं उनकी पैदाइश के जमाने में यूनान, बौद्धिक और गणित के ज्ञान में बहुत आगे बढ़ गया था मेडिकल साइन्स में यूनान को गोया हुकूमत हासिल थी।

जाहिरी असबाब के सामने यहूद का झुक जाना

यहूदियों ने (जिनमें बहुत से अम्बिया आये थे) अपने जमाने के चर्चित विज्ञानों के सामने हथियार डाल दिये उनके बीच रूह के इन्कार का अकीदा मशहूर हो गया और वो इस सिलसिले में हर प्रकार की भौतिक व्याख्या करते उनके नजदीक बिगैर सबब के किसी नश्वर का पाया जाना असम्भव था इसी वजह से वह सय्यिदिना ईसा अ० के उन मोअ़जिज़ात का इन्कार करते जो अल्लाह तआला ने उनकी भौतिक बुद्धियों के इलाज के लिए दिया था जो उस युग की जरूरत थी और समय की आवाज थी यहूद, हर जाहिरी चीज पर एतिमाद कर लेते और गूदे को छोड़ कर छिलके पर उनको सन्तुष्टि हो जाती वास्तविकता को छोड़कर वे जाहिरी चीजों के पीछे भागने लगते थे। तत्व और खून की पवित्रता के अकीदे में वे हद से निकल गए और माल और पदार्थ की मोहब्बत उनके जी में बस गई थी वो दुनियावी जीवन में पूरी तरह फंस के रह गए थे उनके दिल पत्थरों की तरह थे, उनका स्वभाव जालिमों जैसा था न उनको किसी कमजोर पर प्यार आता न किसी निर्धन पर दया करते। जिनकी रगो में इसराईली खून न था उनसे वो जानवरों, कुत्तों और बेजान पत्थरों की तरह व्यवहार करते धनवानों और बलवानों के सामने झुके रहते और छोटों,

कमज़ोरों, निर्बलों, निर्धनों पर अन्याय का पहाड़ तोड़ते जब उन्हें बल हासिल हो जाता तो जुल्म की चक्की चलाते और जब कमजोर पड़ जाते तो खुशाम्दाना, तरीके पर नरम हो जाते जिल्लत की और गुलामी की जिन्दगी में वो एक मुद्दत से पड़े हुए थे जिसने उनके अन्दर मुनाफिकत, मक्कारी, बहानेबाजी, धोका धड़ी, साजिश और हर तरह की कायरता और बदमाशी पैदा कर दी थी वह अपनी इसी मनोदशा से अम्बिया अ० को घटिया समझते उनके विरूद्ध हर प्रकार की जियादती करते रहे यहां तक कि उनकी हत्या कर देना भी अपना लिया। उनकी इसी अस्वस्थ मनोवृत्ति ने सूद, ब्याज का रिवाज पैदा कर दिया वे धार्मिक शिक्षा को बेकार समझने लगे उनके अन्दर और कठोरता पैदा हो गई। मानवता का सन्देश वो भुला बैठे मानव भावना का उनके यहां दूर–दूर तक पता न था अधिकतम लोगों का हृदय ईश्वरीय प्रेम रहित था मानव पर प्यार और मानवता का आदर और सम्मान का अर्थ वो भूल गए थे वो अम्बिया और रिसालत पर ईमान रखते थे ईश्वर ने उनकी ओर बहुत सारे नबी भेजे थे। सच्ची और अच्छी कथाओं से उनके धर्म–ग्रन्थ भरे थे।

परन्तु अंतिम युग में उनकी स्थिति इस प्रकार थी कि वो धार्मिक विषय में सिर्फ उनही बातों पर आस्था रखते थे जो उनकी इच्छा अनुसार हो उनकी जीवन धारा से भी यही प्रकट होता था यदि कोई व्यक्ति उनके इन कार्यों पर आलोचना करता और उनके कामों की जांच पड़ताल करता उनको उचित ईश्वरीय मार्ग की तरफ बुलाता समाज, सुधार और ईश्वरीय धर्म पर अमल करने को कहता या ईश्वरीय धर्म अनुसार कर्म करने को कहता तो वो उसके दुश्मन बन जाते उनसे जंग करते उनपर तरह तरह के इल्जाम लगाते सच्ची बातो को छुपा लेते और उसके विरुद्ध न्यायालय में झूठी गवाही देते।

बनी ईसराईल पर ईश्वर की कृपा :

बनी इसराईल ऐसी कौम थी जिसको ईश्वर ने हर जमाने में दूसरी अन्य कौमों के मुकाबले में विशेषता और प्रयुक्ता प्रदान की थी उनके पास तौहीद का अकीदा था और यही सारी दुनिया में उनकी इज़्ज़त और बरतरी का कारण था। अल्लाह तआला फरमाता है ऐ बनी इसराईलियो तुम लोग उस नेअमत को याद करो जो मैंने तुम्हें इनाम में दी थी और इस बात को याद करो कि मैंने तुमको दुनिया पर प्रमुखता दी।

अच्छी बातों का इन्कार :

बहुत जमाने तक मूर्ति पूजन करने वालों के बीच रहने की वजह से उनमें भी बुत परस्ती पथ भ्रष्टता असाध्य और बुरे स्वभाव पैदा हो गए मिस्र में उन्होंने बछड़े की पूजा शुरू कर दी हज़रत उजैर अ० की पवित्रता और महानता में सीमा रेखा पार कर गए यहां तक कि उन्होंने मनुष्य सीमा कर्म से निकाल कर ईश्वरीय सीमा पर लें गए उनकी नालायकी यहां तक बढ़ी कि उनको बहुत से अम्बिया पर शिर्क बुत–परस्ती, टोने टोटके, जादू, कुफ्र और बदकारी और बदकिरदारी का इल्ज़ाम लगाया और ये इल्जाम लगाते वक्त इनके जी में ईश्वर का जरा भी डर पैदा न हुआ।

बनी ईसराईल का इतराना

बनी इसराईल अपनी तमाम बदबख्तियों और बदमाशियों के बावजूद अपने नामो नसब पर बड़ा गर्व रखते थे और दिन रात ख़याली पुलाव पकाने में मगन रहते थे वो ये कहा करते थे कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं और वो ये भी कहते थे कि हम को आग कुछ ही दिन छुएगी।

हक़ीक़ी मुसीबत और सूरते मुसीबत

अल्लाह के नबियों को जो मुसीबतें आईं जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उहद की लड़ाई में चोट आई सर में ज़ख्म आया दांत टूटा तो यह सूरते मुसीबत थी यानी देखने में मुसीबत थी हक़ीक़त में मुसीबत न थी। अल्लाह के नबियों को हक़ीक़ी मुसीबत नहीं आती इसी तरह कभी अल्लाह के और बन्दों को भी हक़ीक़ी मुसीबत नहीं आती। जिस मुसीबत में ज़ाहिरी परेशानियों और बेचैनी बढ़े वह गुनाहों के सबब है और हक़ीक़ी मुसीबत है और जिस मुसीबत से अल्लाह से तअल्लुक़ में इज़ाफ़ा हो तस्लीम व रज़ा (अल्लाह के फ़ैसलों को ख़ुशी से मान लेना) ज़ियादा हो तो यह ज़ाहिरी मुसीबत है। सूरते मुसीबत देखकर यह बात ख़याल में न लाएं कि किसी गुनाह के सबब ऐसा हुआ। (माखूज़ अज़ इल्म व अमल)

मुसीबत में पड़ना मअ़सियत (गुनाह) में पड़ने से बेहतर है।

आज़ादी का आन्दोलन और बीसवीं सदी

सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी

आज कल के वातावरण को देखते हुए औरत की आत्मा पुकार–पुकार कर कहती है "हम केवल ज़रूरत पूरी करने के लिए तैयार नहीं हम घर के अन्दर रहना चाहती हैं हमारी स्त्रीत्व हमें लौटा दो हमें ऐसी आज़ादी नहीं चाहिए।"

किताबों अखबारों, रेडियों टेलीवीज़नों और फिल्मों के पर्दों पर आज औरत क्यों सवार है? औरत की यह आवारगी कम हिम्मत और बेइज़्ज़ती इस हद तक क्यों पहुंच गयी है? और औरतों के बीच इतनी भयानक परेशानी क्यों है?

यह बेहूदा बकवास करने वाले लोग बेहिसाब दौलत क्यों खर्च करते हैं? इसलिए ताकि औरत के जरिये बहुत अधिक दौलत हासिल करें, यह सब कुछ उन्नति, इत्मिनान और इन्सानियत के नाम पर होता है। आज औरत इन्हीं हालात से दो चार है औरत का दिल अंधेरे का निशाना बन चुका है असली औरत खत्म हो चुकी हैं उसकी आंखो की रोशनी खत्म हो चुकी है।

कल्चर आर्ट और फन–माहौल में फिलमी गानों की गूंज यह सब क्या है? इसकी क्या हैसियत है? इसको नजर अन्दाज कर दिया गया है जिसने अच्छे व्यवहार को खत्म कर दिया और आर्ट के नाम पर औरत ने अपने आपको बहुत पसंद, जल्दबाज और नासमझ बना दिया है।

आज की बीसीवीं सदी की टेक्नालोजी ने यह तोहफ़ा इन्सानियत और ख़ासतौर पर औरत को दिया है।

औरत के बारे में रेडिया, टेलीविज़न और किताबों में सुन्दर और बहुत सुन्दर, शब्द और परिभाषाएं प्रयोग की जाती हैं नये ज़माने की औरत की यही परेशानी है, यही उसकी पराजय भी है।

कहां गये वह लोग जो कहा करते थे कि दुनिया में औरतों का मक़ाम (स्थान) नहीं है? उन्हें उनके कामों का सही पैसा नहीं मिलता आज तो औरत हर मैदान में आगे–आगे हैं :

समाचारों में औरत, सड़कों पर औरत फैशन में औरत, फिल्म में पर्दों पर औरत नाटकों और थ्येटरों में औरत, रेडियो और टेलीवीजन में औरत, फिल्मी गानों में औरत, यहां तक कि आज–कल जगह–जगह सड़कों पर औरत का फोटो और उसके नग्न शरीर पर प्रचार करके व्यापार में लाभ उठाते हैं, औरत के नग्न शरीर का प्रचार करके मर्दों का मनोभाव उभारा जाता है, क्या आज की सभ्यता के लिए यह शर्म की बात नहीं है, क्या औरत अपने इस कार्य पर खुश है?

वास्तविकता यह है कि नया ज़माना पुराने सद्व्यवहार को खत्म ही कर रहा है यह मग़रिबी सभ्यता के अक्ल वालों की अक्ल कहां चली गयी?

नाटकों, फिल्मों और समाचारों में औरत के शरीर का प्रचार करके लाभ उठाना ही यूरोप अमेरिका और रूस को जड़ से उखाड़ फेंकने का कारण बना है, यह वास्तव में इस बात का परिणाम है कि दुनिया में जब भी बेहयाइयां आम हो जाती हैं तो फिर वह क़ौम अच्छे व्यवहार से बिल्कुल खोख़ली हो जाती है।

आज औरत की बरबादी का ज़िम्मेदार यही घातक तूफ़ान है यही, इन्सानियत का दुश्मन है, यही लोग हैं जिन्होंने औरत की आज़ादी का नारा लगाया था, आज वही लोग अपनी तिजारत को बढ़ाने और ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने के लिए औरत को आगे–आगे कर रहे हैं उन्हें इसे गायिका बनाया, डान्सर बनाया, और क्या–क्या न बनाया, यहां तक कि इसे सूली पर लटका दिया।

आज दुनिया में कलाओं के प्रचार में भी औरत ही को प्रयोग किया जाता है, औरत के ज़रिये बेहया, चंचल अदाएं समाचारों में दिये जाते हैं, अब तो यह बुराई यहां तक बढ़ गयी है कि अंग्रेजी दवाओं के प्रचार तक में आ गयी है, सड़कों के चौराहों पर औरत अखबार व किताबों की शोभा औरत । यहां तक कि माचिस की डिबिया के लेबिल पर भी औरत–औरत को कला और टेकनालोजी में इन्कलाब का नाम दिया जाता है। अर्थात औरत एक रोशन चिराग है जो सारी चीजों को चमकाती है, हाय रे बरबादी इन्सानों की और उनके मनोभाव की।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि आजादी का आन्दोलन चलाने वाले इस पर बहस भी करते हैं कि औरत को किन–किन तरीकों से प्रयोग किया

जाए कि तिजारत में अधिक से अधिक फायदा हासिल हो, तिजारत को चमकाने के लिए औरत के शरीर पर प्रचार करके मनोभाव को बेकाबू करना बहुत जरूरी समझा जाता हैं, यह है तिजारत में औरत का सम्मान।

औरत की आत्मा पुकार–पुकार कर कहती है कि मैं एक हक़ीक़ी औरत बन कर जिन्दा रहना चाहती हूं, मैं केवल एक वस्तु बनकर रहना नहीं चाहती, आज औरत मर्दों के लिए एक जरूरी सामान बनकर रह गयी है।

इस आजादी के आन्दोलन चलाने वालों ने हकीकी आजादी देने के बजाए औरत को एक जेल का कैदी बना दिया है, मर्द तो अभी उसी ऊंचे दर्जे पर हैं जैसे– कि पहले थे और औरत, औरत ही बनी है नये जमाने की औरत बदशक्ल, बेरुखी और बहुत मकरूह (घृणित) हो चुकी है। औरतें बहुत ही ऊंचा उठना चाहती थीं परन्तु मर्द से आगे होने में बिल्कुल नाकाम रही।

''फिर यह आजादी का आन्दोलन चलाने वाले बताएं कि औरतों को आजादी देने के नाम पर यह धोखाबाज़ी की गर्म बाज़ारी क्यों चल रही है?

एक फिल्मी अदाकारा ''रेवड़ी जीनीर्द फ्लोरण्डा'' जो कि फिल्मो में काम करने के बाद तौबः कर चुकी हैं उन्होंने कहा, ''फिल्म में काम करना वास्तव में कोढ़ियों के अस्पताल में जाना है, यह काम वास्तव में अपने आप को धोखा देना है मुझे अफसोस है। उन ऐक्टर और ऐक्ट्रेस की मूर्खता पर, वह मुहब्बत व प्यार से बिल्कुल वंचित है।''

यह ऐक्टर और ऐक्ट्रेस एक–एक फिल्म पर हज़ारों डालर लेते हैं और फिल्म के ऐक्ट्रीन फ़कीरों और ग़रीबों की किरदार निगारी करते हैं, देखने वाले यह एहसास करते हैं कि उन्हें फ़कीरों से मुहब्बत है। अतः यह इस काम के लिए सैकड़ों डालर पहले ही ले चुके होते हैं, क्या यह धोखा नहीं है, क्या यह इन्सानियत के चेहरे पर दाग नहीं है। क्या यह अस्तित्व की बदनामी नहीं है?

बल्कि सच्चाई तो यह है कि आज की औरत टूट चुकी है, बिखर चुकी है और उन्नति के नाम पर जुल्म की चक्की में पिस रही है, परन्तु उसे एहसास तक नहीं।

आज कल के जमाने में प्यार व मुहब्बत का नाम आते ही औरत नज़रों के सामने आ जाती है जैसे कि औरत का दूसरा नाम ''मुहब्बत'' पड़ गया है, गरीबी तहज़ीब के नाम पर सूली पर चढ़ चुकी है, वह बंजर हो गयी है उसकी सुन्दरता की शोभा खत्म हो चुकी है, उसी शोभा को उसके ऊंचे ख्यालात ही ने खत्म कर दिया है जब कोई मनोभाव को इन्सानियत के ऊंचा उठाने में क़ायम न रख सके और कोई मुहब्बत ज़िन्दगी के फरायज़ को अदा न कर सके तो ऐसा मनोभाव ''घटाटोप अंधेरा,'' अपनी धरती की मौत और इन्सानियत की मजबूरी है।

नये जमाने की औरत के दिमाग़ पर फैशन तो पागलपन की हद तक छा गया है, वह शरीर की सजावट में नग्न होना चाहती है जबकि इसका परिणाम बड़ा ही दुखदाई होता है और आखिरकार वह पतझड़ के मौसम के पत्तों की तरह बिखर जाती है।

आज औरतें अपनी सजावट में मस्त हैं, वह इस बात की कोशिश में लगी रहती हैं कि ज्यादा से ज्यादा सुन्दर दिखाई दें, चेहरे की चमक को हमेशा कायम रखने और अपने शरीर को सुन्दर बनाने में लगी रहती हैं परन्तु आजादी की इस हद तक पहुंच जाने के बाद भी वह बेचैन क्यों हैं उन्हें सुकून क्यों नहीं ?

जितनी भी गहराई से नये ज़माने की औरतों को देखा जाए यही बात समझ में आयेगी कि उसके ऊंचे ख्यालात, उसकी आजादी और उसकी उन्नति ही ने उसे आजादी देने के बजाए दुःख में डाल दिया है। पश्चिमी देश की तहजीब में तो वह एक ''ज़रूरी सामान'' बन कर रह गयी है, उसको सही मकाम इस्लाम ही ने दिया है और इस्लामी व्यवस्था में ही वह चैन व सुकून की जिन्दगी बसर कर सकती है। औरत को चाहिए कि इस्लाम के बारे में गौर से सोचे, ओर देखे कि इस्लाम में उसके लिए क्या–क्या हुकूक़ रहते हैं और उसे क्या क्या सहूलतें दी हैं कि इस्लाम में पर्दा में रह कर भी कितनी इज़्ज़त पाती है।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

मेंहदी

श्रीमती अस्मा हसन

रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद

अक्सर यह पंक्ति सुनते रहते थे लेकिन इसके एक दो अनुभव ऐसे हुए कि वास्तव में मेंहदी की उपयोगिता दूनी हो गई। मेरे मित्र के नाखून पर चोट लग गई। नाखून काला पड़ गया। हाथ का नाखून था। देखने में बुरा मालूम होता था। फिर ऐसा हुआ कि नाखून में वरम हो गया। डाक्टरों से पूछ कर बहुत क्रीमें लागईं। वरम उतर गया परन्तु डाक्टर के अनुसार नाखून की फफूंदी मुश्किल से जाएगी। एक दिन मैंने हकीम साहब से पूछा कि इसका क्या इलाज है?

वह कहने लगे ताजा मेंहदी पीस कर थोड़ा सा जौका सिरका मिलाकर नाखून पर रोजाना लगाइये मैंने यह नुस्खा प्रयोग किया। कुछ दिनों के बाद नाखून का वरम उतर गया और नया नाखून आने लगा। इसके बाद नाखून भी खराब नहीं हुआ।

इसी प्रकार एक बच्ची के सिर में फुंसियां निकल आईं। वह हर समय सिर खुजाती रहती थी। हकीम साहब को दिखाया तो उन्होंने रौग़ने हिना (मेंहदी का तेल) की बोतल निकाली। थोड़ा सा तेल ज़खमों पर लगाने के लिए दिया। चन्द रोज़ में बच्ची के सिर की फुंसिया ठीक हो गईं। हकीम साहब ने यह तेल मेंहदी के फलों और पत्तियों को पानी में पका कर पानी छान कर तिल के तेल में मिलाकर बनाया था।

कुछ लोगों का मिज़ाज बहुत गर्म होता है। गर्मी में हाथ पांव लाल हो जाते हैं, सिर में हर समय दर्द रहता है। चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है। पांव की जलन और सिर दर्द से परेशान रहते हैं। मेंहदी के ताज़े पत्ते पीस कर रोजाना तलवों में लगाने से पांव के घाव ठीक हो जाते हें, तलवों की जलन जाती रहती है। इसी मेंहदी का लेप दोनों कनपटियों पर लगाने से बरसों पुराना सिरदर्द भी दूर हो जाएगा। थोड़े से मेंहदी के पत्ते प्याली में रात को भिगो दीजिए सुबह छान कर पी लीजिए आपके बदन की गर्मी को आराम आजाएगा। गर्मी के कारण आंखें सुर्ख हो जाएं तो मेंहदी की पिसी पत्ती का थोड़ा सा लेप आंखों के चारों तरफ लगाने से आराम आ जाता है।

जिन लोगों को नीद न आती हो, उन्हे चाहिए कि मेंहदी के फूल जमा करके तकिया बना लें। यह तकिया सिरके नीचे लगाने और मेंहदी का तेल सिर में लगाने से नींद न आने की तकलीफ दूर हो जाती है। बूढ़े लोगों को बुआई फटने, वजू बार बार करने से पांव फटने लगते हैं ऐसे में मेंहदी के पत्ते पीस कर दो चार बार लगाने से आराम हो जाता है। पैदल चलने से पांव में छाले पड़ जाते हैं। इन छालों और जख्मों पर मेंहदी का लेप किया जाए तो जल्द आराम हो जाता है।

सऊदी अरब में मेंहदी लगाने का रिवाज है। इसी प्रकार इण्डोनेशिया और अफ़रीकी जनजातियों में भी मेंहदी शौक से लगाई जाती है। प्राचीन मिस्र की महिलाएं सिंगार की दिल दादा थीं। वह अपने बालों को मेंहदी से रंगतीं और उनमें कुछ चीजें मिलाकर बालों को शेड देकर सुन्दर बनातीं। वह मेंहदी के सुन्दर फूल पत्ती हाथों पर बनातीं। मिस्र की सिंगार करने वाली औरतें इस फन (शिल्प) में निपुण थीं।

मिस्र के एहराम के ताबूतों में मेंहदी की पत्तियां पाई गई हैं। अक्सर कफन मेंहदी से रंगे हुए थे। मिस्र के फिरऔनों को मेंहदी बहुत पसंद थी। वह इस की सुगंध के जादू से प्रभावित थे। शायद यही कारण था कि वह सिंगार करने वाली औरतों को ताकीद करते कि जो दोशीज़ाएं (कुमारियां) उनके हरम में दाखिल हों हिना (मेंहदी) की खुशबू में बसी हों और उनके कपड़े भी मेंहदी की खुशबू से महक रहे हों। फिरऔन मिस्र खुद भी अपने लिबास मेंहदी के रंग में भिगो कर पहना करते थे एहराम और कफन में मेंहदी की पत्तियां इस लिए रखी जाती थीं कि इसकी सुगंध से कीड़े मकोड़े भाग जाएं और लाशों को हानि न पहुंचे बल्कि इस की सुगंध से मकबरे महकते रहें।

हिन्दुओं में भी मेंहदी को विशेष महत्व प्राप्त है मन्दिरों में जो खुशबुएं जलाई जाती हैं उनमें मेंहदी शामिल है। संस्कृत की प्रचीन पुस्तकों में मेंहदी का वर्णन मिलता है। दुलहन की मांग भरने के लिए सेंदूर और दूसरी वस्तुओं के साथ में मेंहदी भी शामिल की जाती थी। शादी विवाह में जब तक हाथ

पांव मेंहदी से रंग न लिए जाते, शादी की रस्में बेकार समझी जाती थीं।

मेंहदी का रंग गहरा करने के लिए इस में खटास मिलाई जाती है। लीमू का रस और तेल मिलाकर मेंहदी घोलते ताकि रंग तेज आए। आमला, सिकाकाई, लीमू का छिलका पानी में खूब पका कर इस पानी से मेंहदी घोली जाए और उसमें थोड़ी सी काफी मिला दी जाए तो बालों में अच्छा शेड आता है। गांवों में महिलाएं अखरोट का छिलका पका कर या विंदासा कूट कर मेंहदी में मिलाती हैं ताकि रंग चोखा आए और जल्द मंद न पड़े।

हमारे प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेंहदी पसन्द फ़रमाते थे। हज़रत अनस (रज़ि०) बिन मालिक बयान करते हैं कि आं हुजूर (सल्ल०) फ़रमाते थे "मेंहदी का खिजाब लगाओ, यह जवानी को बढ़ाती है। सुन्दरता में इज़ाफ़ा करती और ताकत को बढ़ाती है। हुजूर सल्ल० खुद भी मेंहदी लगाते थे आप की जिन्दगी में कोई ऐसा जख़्म हुआ न कांटा चुभा पर मेंहदी न लगाई हो।

मेंहदी का रंग सुन्दर सुर्ख होने की वजह से दिल को भाता है। हमारे यहां दुल्हन का सिंगार मेंहदी है। इसके बिना दुल्हन सजती नहीं। कोई भी जख्म हो उसके इलाज का बुन्यादी सिद्धान्त यह है कि उसमें मौजूद पीप निकल जाए, आगे न पैदा हो और घाव भर जाए। मेंहदी का गुण यह है कि यह पीप को सुखा कर घाव को ठीक कर देती है।

आप की पिंडलियां और पांव कटे फटे हों तो मेंहदी की पत्ती पीस कर मामूली सा फलों का सिर्का मिला कर लगाने और रात को ज़ैतून का तेल हलका सा लगाने और पीने से यह तकलीफ जाती रहती है। मेंहदी की चन्द्र पत्तियां पानी में उबाल कर ठंडा कर के सुबह शाम गरारा करें तो आप के मुंह के छाले और फटी हुई जबान ठीक हो जाएगी।

पहले ज़माने में चेचक का जोर था। इससे आंखें भी खराब हो जाती थीं। हकीम चेचक के मरीज़ को ताकीद करते कि सुबह शाम मेंहदी की पत्तियां पीस कर तलवों में नियमित रूप से लेप लगा लिया जाए। इस से चेचक के दाने भी ठीक हो जाते थे और आंखें बच जाती थीं। सिर में फुंसियां निकल आएं तो मेंहदी में थोड़ा सा ज़ैतून का तेल मिलाकर मरहम की तरह लगाने से आराम हो जाता है। मेंहदी की पत्तियां खून को साफ करती हैं। मेंहदी की पत्तियां उबाल कर पिलाने से और लगाने से फोड़े फुंसियां ठीक हो जाती हैं और खून की खराबी दूर हो जाती है। पीलिया हो तो मेंहदी की पत्तियां रात को पानी में भिगो दीजिए और सुबह को छान कर चीनी मिला कर पीजिए आराम हो जाएगा। बढ़ी हुई तिल्ली के लिए भी यह पानी लाभदायक है।

दो किलो पानी में आधा किलो मेंहदी की पत्तियां पकाइये जब पानी आधे से कम रह जाए तो उसमें तिल का तेल मिलाकर पकाइये जब सारा पानी जल जाए तो उतारछान कर रखिए। यह तेल जोड़ों के दर्द और साइटिका के दर्द में लाभदायक है।

अल्लाह तआला ने हर मरज़ के लिए दवा पैदा की है।

हम्दे बारी तआला

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

तू ने बख़्शी ग़िज़ा और पानी हवा
हर मरज़ की दवा देके बख़्शी शिफ़ा
दूर करता है तू ही मुसीबत सदा
किस ज़ुबां से करें शुक्र तेरा अदा
क्यों न तस्बीह तेरी पढ़ें सुब्हो शाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तूने बख़्शे हमें कान बख़्शी ज़बां
चश्मो क़ल्बो दिमाग़ और दानाइयां
मालो इल्मो अमल और तवानाइयां
ज़िन्दगी यो फ़राग़ और मकानोज़मां
तेरी नाशुक्री करना है हम पर हराम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू अलीयो कबीरो हफ़ीज़ ऐ ख़ुदा
ज़ात तेरी बड़ी शान सब से जुदा
तेरे दर के भिखारी हैं शाहो गदा
बे सहारों की कश्ती का तू ना ख़ुदा
तू ही करता है सब की हिफ़ाज़त का काम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू मुक़ीतो हसीबो जलीलो करीम
तू रकीबो मुजीब और वासिअ हकीम
तू है मुश्किल कुशा लुत्फ़ तेरा अमीम
दोनों आलम में तेरी है रहमत अज़ीम
हैं तेरे ख़ूब रू हैं तेरे मुश्क फ़ाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

कोई तेरा हबीब और तेरा ख़लील
तेरे तस्नीम और कौसरो सल्सबील
हर नफ़स है लबों पर यह ज़िक्रे जमील
ऐ ख़ुदा हस्बुनल्लाहु निअमल् वकील
दोनों आलम तेरे तेरा योमुल्क़ियाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

ज़ालिम ख़ुदा की मार का अब इन्तिज़ार कर
मज़लूम की आहों का ज़रा देखना असर

हैदर अली नदवी

जुल्म एक घिनावना जुर्म है। जो इन्सान को हक व सदाकत से दूर कर देता है ज़ालिम को जुल्म का बदला चुकाना पड़ता है जुल्म की बेशुमार शक्लें हैं जुल्म किसी भी रूप में हो इस्लाम में वर्जित है पैगम्बरे इस्लाम मुहम्मद (सल्ल०) जब अपने सहाबा को किसी दअवती मुहिम के लिए भेजते तो तमाम नसीहतों के साथ एक बात विशेष रूप से कहते थे "पीड़ित व्यक्ति की बद्दुआ से बचना इसलिए कि उसके और अल्लाह (ईश्वर) के दरमियान कोई रोक नहीं होता है' तात्पर्य यह कि जब किसी व्यक्ति पर बिला वजह अत्याचार किया जाए किसी विशेष समुदाय या विशेष जाति को सताया जाए उसके हुकूक (अधिकारों) को छीन कर उसका जीवन नरकीय बना दिया जाए–शासन, ताकत या संख्या के बल पर अधिकारों का हनन किया जाए ऐसी अवस्था में पीड़ित व्यक्ति की जबान से जो आह निकलती है वह बड़े–बड़े शासकों की सत्ता को खाकिस्तर कर देती है एक और मौके पर पैगम्बरे अम्नों अमान ने फरमाया कि अल्लाह तआला मज्लूम की दुआ को रद नहीं करता उसे आसमानों से ऊपर उठा लेता है भले ही मजलूम व्यक्ति नास्तिक (काफिर) ही क्यों न हो इस्लाम ने किसी पर भी जुल्म रवा नहीं रखा है – शान्ति के स्थापक मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम की विशेषताओ को प्रसारित करने का आदेश दिया बल्कि आपको इसी पवित्र कार्य के लिए भेजा गया था और अनुयाइयों के जीवन का मक्सद भी यही है कि वह इस्लाम की शिक्षा का स्वयं पालन करते हुए इसका प्रचार प्रसार करें। तुम सर्वश्रेष्ठ कौम हो तुम को मनुष्यों के (मार्ग दर्शन) के लिए संसार में भेजा गया तुम्हारा मिशन ही यह है कि तुम लोगों को सत्कर्मों का आदेश करते हो और दुष्कर्मों से रोकते हो।' मुसलमान के जीवन का लक्ष्य है कि वह मानवता को जीवित करे अगर वह यह शुभ कार्य नहीं कर रहा है तो अपने दायित्व का निर्वाह नहीं कर रहा है वह अपने लक्ष्य से हट गया है – एक बात याद रहे कि एक इन्सान की तरह मुसलमान भी इन्सान है इन्सानी आवश्यकताएं उसके साथ भी हैं इसलिए वह भी अपनी मूल भूत आवश्यकताओं को पूरा करेगा खाना पीना घर मकान परिवार रिश्तेदारी चलाना ये सारे काम मुसलमान भी करेगा लेकिन ये सब उसकी आवश्यकताएं हैं मकसद नहीं है लेकिन अफसोस कि मुसलमान ही आज अपने मकसद से भटक गया भौतिक सुख सुविधाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बना बैठा – आज मुसलमान रस्मी और कौमी मुसलमान रह गया इस्लाम और मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का आदर्श उसके जीवन से निकल गया और संसार में धक्के खा रहाहै आज जरूरत है कि इस्लाम हमारी किताबों से नही बल्कि हमारे जीवन से समझा जाए, हमारे व्यवहार से हमारे मुआमलात से हमारी शादी व्याह से हमारे शोक तथा प्रसन्नता के उत्सवों से हमारी जीवन शैली से हमारे व्यापार से हमारी शासन प्रणाली से इस्लाम समझा जाए। हम संसार में प्रेम के दूत बन कर जिएं मानवता की सेवा के लिए जिएं यदि मुसलमान दावत के दायित्व को पूरा नहीं कर रहा है तो वह पूरी मानवता पर जुल्म कर रहा है। भ्रष्टाचार, रिश्वत घोटाले, गबन, चोरी, डकैती जिनाकारी अय्याशी पनपती रहे और ताकत रखते हुए मुसलमान इसके विरोध में उठ न खड़ा हो तो उस की गिन्ती ज़ालिमों में हो जाएगी। लेकिन सितम बालाएं सितम यह कि जिस कौम को इन पापों को मिटाने के लिए पैदा किया गया हो वही यह पाप करे इसलिए आवश्यकता है कि हमारा बुद्धि जीवी वर्ग इसकी समीक्षा करे, आत्मा चिन्तन करके कोई ठोस कदम उठाए तथा इसके लिए जो कार्य हो रहा है उसकी सराहना करे उसमें भागीदारी ले । इस्लाम को सही रूप में व्यवहारिक जीवन में पेश करे। इस्लाम के प्रचार–प्रसार को अपना लक्ष्य बनाए लेकिन हिकमत के साथ "ला इकराह फिद्दीनि" को सामने रखे कि धर्म में जबर दस्ती बिल्कुल नहीं है हक बात रखी जाए, किसी को बुरा भला गाली गलौज न किया जाए हुजूर सल्ल० ने फरमाया तुम दूसरों के बातिल

मअ़बूदों (पूज्य) को गाली मत बको वरना वह तुम्हारे सत्य मअबूद को गाली बकेंगे। इसलिए समझदारी से काम लेते हुए मानवता को सच्चाई के प्रति जागरूक किया जाए यही मुसलमान का मक्सद व दायित्व है। ऐ मुसलमानो तुम बेहतरीन कौम (उम्मत) हो तुम को मानवता की भलाई के लिए भेजा गया तुम भलाई का हुक्म करते हो और बुराई से रोकते हो और एक अल्लाह पर विश्वास रखते हो –

ईश्वर की दृष्टि में मुसलमान की महानता का आधार माल व दौलत, नहीं है और न ही सियासत व हुकूमत है क्योंकि इन चीजों के मालिक मुसलमानों से जियादा दूसरे लोग पहले से मौजूद थे मुसलमानों की बेहतरी तो इसमें है कि वह अपने इल्म, अपनी सियासत अपनी दौलत अपनी हिकमत से अच्छे समाज की तामीर करें। एक ऐसा मुसलमान जो आला फलसफी है प्रोफेसर है या लीडर है दौलत मन्द है वह शरीअत की पाबन्दी नहीं कर रहा है, वह आखिरत को भूल कर सिर्फ दुन्यावी कामयाबी व दुन्यावी तरक्की में लगा है तो वह बड़े घाटे में जा रहा है ऐसे शख्स से वह मामूली पढ़ा लिखा बेहतर है जो शरीअत का पाबन्द है और उस ने जो सीखा है दूसरों को पहुंचा भी रहा है। वह अच्छी बातें लोगों में फैला रहा है और बुराइयों से लोगों को रोक रहा है क्योंकि यह अपने मकसद पर है एक मुसाफिर सही दिशा पर पैदल जा रहा है तो एक न एक दिन मंजिल तक पहुंचेगा इसके विपरीत अगर कोई १०० किमी की स्पीड से गाड़ी पर गलत दिशा में जा रहाहै तो वह कभी भी मंजिल तक न पहुंचे गा। लिहाजा मुसाफिर को चाहिए कि अपने सफर का रुख अपनी मंजिल की तरफ कर ले दोस्तों आज जुल्म सितम और अन्य बुराइयां जो विकराल रूप धारण कर चुकी है। उसका मुख्य कारण ये है कि मुसलमानों ने दावती काम छोड़ रखा है। दावती जज़्बा ख़त्म हो गया है। मुसलमानों को चाहिए कि वह अपने सफर का रूख बदलें और अपनी मंज़िल का रूख करें उनका मकसद सुन्नते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जरीअे अल्लाह को राजी करना है।

परेशानियों का इलाज

प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

परेशानी और दुख–दर्द से बचने के लिए शरीअत की तालीमात मौजूद हैं, जरूरत उन पर अमल करने की है। परेशानियों से बचने के लिए पांच बातों पर अमल किया जाना चाहिए –

एकः गुनाहों से बचना और तौबः करना - मुसीबतें और परेशानियां गुनाहों की वजह से आती हैं। मुसीबत के वक्त हम अपनी कोताहियों और गुनाहों को याद करें और उन्हें दो बारा न होने देने और न करने का दिल से इरादा करें। सोचने की बात है कि ज़िला के हाकिम से नाराज करने से तो हम डरें और हाकिमों के हाकिम (अल्लाह) के नाराज करने से न डरें, यह बड़ी नासमझी की बात है और बड़े घाटे का काम है। हम जब तक अल्लाह को राजी न करेंगे, मुसीबतें दूर न होंगी।

दो : अपना फर्ज मन्सबी पूरा करना - हमारा फर्ज मन्सबी नेकियों का हुक्म करना और बुराइयों से मना करना है जिस काम को करने की हमारी ज़िम्मेदारी थी। हम उससे गाफिल हो गये। सब मुसलमान नेक काम करने के साथ तमाम गुनाहों से बचने की खुद कोशिश करें और दूसरों को भी बुराइयों से बचने के लिए हिकमत के साथ कहें।

तीनः दुआ किया करें : दुआ आई बला को टालती है और जो अभी आई नहीं उसको भी रफा कर देती है। अल्लाह के नजदीक दुआ से ज्यादा कोई चीज कद्र व मंजिलत की नहीं। दुआ मुसलमानों का हथियार और तौबा ढाल है।

चार : सदकः व खैरात किया करें : अल्लाह के रसूल सल्ल० का इरशाद है अपनी बीमारियों का सदकः से इलाज करो । सदकः नेकियों को बढ़ाता है उम्र को बढ़ाता है अल्लाह के गुस्से को दूर करता है।

पांच : मसनून औराद व वजाइफ़ का पढना : अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया जो शख्स सुबह व शाम सूरः इखलास, सूरः फलक और सूरः नास पढ़ लिया करे तो यह उसके लिए काफी है और यह हर बला से बचाने के लिए काफी है।

(तामीर हयात, लखनऊ २५ जून २००४ से लिया गया)

जो दिलों को फ़तह कर ले वही फ़ातिहे ज़माना है

मौलाना सैय्यद मुहम्मदुल हसनी रह०

मनुष्य का सबसे बड़ा कमाल ये है कि उसका जाहिर व बातिन (वाह्यान्तर) समान हो एक ओर उसकी छाती ईमान से, और हृदय सदैव रहने वाले प्रेम से पूर्ण हो तो दूसरी ओर उसकी जबान उसके हृदय की हमनवा और उसका कर्म उसकी भावनाओं की पुष्टि (तसदीक) कर रहा हो, यदि ये बात किसी मनुष्य को प्राप्त हो जाए तो उसकी जबान, उसके कर्म उसके भाषण और रचना में एक ऐसा आकर्षण पैदा हो जाएगा जिसको शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता परन्तु उसकी मिठास का प्रत्येक व्यक्ति आभास करेगा और ऐसा मालूम होगा कि जैसे किसी ने उसके हृदय की बात कह दी हो, उसकी खोई हुई पूंजी उसको मिल गई हो

"देखना तकरीर की लज्जत कि जो उसने कहा।

मैंने जाना गोया ये पहले से मेरे दिल में है।"

स्वार्थ से पूर्ण इस संसार में जहां मनुष्य अपने हित और स्वार्थ की परिभाषा से परिचित है, ये आवाज अजनबी है परन्तु अभी इसमें हृदय को फतह करने और संसार के समुदायों को अपना सेवक बनाने की शक्ति है।

जो दिलो को फ़तह कर ले वही फ़ातिहे जमाना–

समाज के कुचले हुए और स्वार्थ के बोझ में दबे हुए मनुष्यों के लिए अब भी अगर कोई चीज़ बहुमूल्य और आकर्षण रखती है तो यही ईमान और यकीन की शक्ति और बाह्यान्तर की समानता है यद्यपि इस नास्तिकता के वातावरण ने उनके हृदय की सारी हरारत और गर्मजोशी और सादगी को मद्धिम कर दिया और उसके स्थान पर एक बनावटी और मशीनी हृदय लगाने का प्रयत्न किया है जो हर प्रकार की कोमल भावनाओं और दर्द महब्बत से खाली है परन्तु जब ये आवाज उनके कानों से टकराती है तो उनका हृदय धड़कता हुआ, नाड़ी चलती हुई प्रतीत होती है। अगर ये आवाज ज़रा ज्यादा शक्ति से लगाई जाती तो उनको झझोड़ने और जगाने के लिए पर्याप्त होती। ये बेग़रज़ी खुदा का खौफ, वास्तविक मानवता और कथन तथा कर्म की समानता की शक्ति है, जिसको आज पूरी तरह से नज़र अन्दाज़ किया जा रहा है, और हर स्थान पर इसके लिए जीवन तंग किया गया है संसार की मामूली चीज़ों के लिए प्रयत्न करने वाले बल्कि मर मिटनेवाले तुच्छ इच्छाओं पर प्राण निछावर करने वाले मौजूद हैं (हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पर दम निकले) परन्तु जिसकी आवश्यकता इस समय सब से कम समझी जा रही है, और जिस को हर देश में नाकाबिले ऐतबार जाना जा रहा है वह यही वास्तविक मानवता की विशेषता है जिस पर समाज और आखिरत से छुटकारे की निर्भरता है जिसके समाप्त होने से संपूर्ण संसार निलामी की मण्डी बन कर रह गया है जिसमें मृत्यु जीवन के समान और मृत्यु अन्तिम समाधान बन कर रह गया है। "ज़िन्दगी है या कोई तूफान है हम तो इस जीने के हाथों मर चले"

सारी समस्या इतनी है कि ऐसी बात कही जाए जिससे काम भी बन जाए और दूसरे हृदय का हाल और वास्तविक इच्छा से परिचित ना हो सके, हमारा स्वार्थ पूरा हो चाहे किसी की जान जाती हो हमारी इच्छाएं पूरी होनी चाहिए चाहे दूसरों को एक समय का भोजन और आवश्यकता के वस्त्र भी प्राप्त नहीं।

ये स्वार्थपूर्ण स्वभाव है जो पश्चिमी समुदाय के ग़लबे और इस्लामी अहद (समय) के जवाल से सारे संसार पर छा गया है ऐसा प्रतीत होता है कि जल व पवन में प्रवेश कर गया है परन्तु अल्लाह, जिसने मनुष्य को आयु प्रदान की है और उसके जीवन की उन्नति के लिए जो सामान प्रदान किया है, उसमें उसकी कोई ख़ता नहीं ख़ता उन की है जिन्होंने विद्रोह पर कमर बान्ध रखी है स्वयं अपनी नाक़दरी और अपमान पर उतर आये हैं। जिन्होंने नुबूवत के प्रकाश और सीधे मार्ग से हट कर जीवन व्यतीत करने का प्रण कर लिया है या जो लोग ईमान और अकीदा रखने के बाद भी अमल से ग़ाफिल हैं। जो स्वार्थ का निवारण स्वार्थ से और इच्छाओं को इच्छाओं से और वासना की भड़कती अग्नि को वासना से शांत करना चाहते हैं, जिन्होंने मनुष्य की कोमल भावनाओं और उसकी आत्मा को समाप्त करने

का प्रयत्न किया है और ये समझा है कि इससे सांप्रदायिकता समाप्त हो जायेगी और मनुष्य के जीवन में शान्ति आजायेगी, जिन्होंने हृदय की हर सदा (आवाज) को निर्दयता से निरस्त कर दिया और उसकी हरकत को क्रुरता से कुचल दिया जिन्होंने धन और मानकी बलि दी (कुरबानगाह) पर मनुष्य की हर सहानुभूति, दिल सोजी (हदृय की कुढ़न) वास्तविकता अल्लाह का खौफ़, कर्तव्यता और सत्यता को भेंट चढ़ा दिया है।

मनुष्यों के इस जंगल में सबके मस्तिष्क पर इच्छाओं का भूत सवार है ऐसे समय में नुबूवत का वही प्रकाश मार्ग दर्शन कर सकता है जिसने अधिकार (हक) लेने नही अधिकार छोड़ने की शिक्षा दी हो कुरआन में अल्लाह का इरशाद है "वो ऐसे लोग है जो अपने पर दूसरों को प्राथमिकता (तरजीह) देते हें चाहे उनको नुकसान उठाना पड़े।

(सूरह हर्श : १६)

जिसने क्रोध को पी जाने को वीरता करार दिया जिसने सम्बन्ध तोड़ने वाले से सम्बन्ध जोड़ने का अदेश दिया, जिसने दुख में रहकर दूसरों के दुख को दूर करने की शिक्षा दी जिसने लाभ को छोड़ कर बलिदान को प्राथमिकता देने का मार्ग बताया जिसने परिवार वालों को लाभ (फायदे) में पीछे रखकर दूसरों को आगे रखा जिसने एकान्त और भीड़ में रात्रि के अन्धकार और दिन के प्रकाश में हर स्थान पर समान अवस्था और समान भावनाओं को बाक़ी रहने और किसी लालच, भय में भी इस्लाम के नियमों के पालन से विचलित ना होने को मनुष्यता का वास्तविक जौहर और कमाल करार दिया है उसकी शिक्षा है कि कम से कम सेवा लो और ज़्यादा से ज्यादा सेवा करो और अधिक से अधिक सखावत करो और मांगने से अपने आप को बचाओ ।

मखलूक (जीव जन्तु) को लाभ पहुंचाओ और उसका बदला अल्लाह से चाहो अल्लाह की उपासना और उसके दीन के प्रचार को अपना उद्देश्य बनाओ इसका बदला भी अल्लाह से मांगो।

इस्लाम के नियम केवल कागजी फूल या प्रसन्न करने वाले विचार नहीं जिसके लिए मधुर वाणी या कलम की रवानी प्राप्त हो बल्कि इसके लिए इच्छाओं की समाप्ति दृढ़ संकल्प, साहस और सबसे बढ़कर अल्लाह के खौफ से रोने व टूटे हृदय की आवश्यकता है उसके बगैर कोई ताला और हृदय की कोई गिरह खुलती प्रतीत नहीं होती –

तू बचा बचा के ना रख इसे
तेरा आईना है वो आईना।
शिकस्ता हो तो अजीज तर,
है निगाह आईना साज में ।

इस लिए हममें से हर एक व्यक्ति के लिये चाहे वह समाज के किसी स्तर से संबंधित हो एक ही नियम है और अपने नफ़्स का समय–समय पर मुहासबा करना चाहिए। अपने अन्तःकरण और प्रत्यक्ष को समान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जिन चीजों पर हम आस्था और ईमान रखते हैं, या जिन चीजों के लिए हमारी प्रशंसा की गयी उसको हमने पर्याप्त (काफी) समझ लिया है उन पर अमल करने का दृढ़ संकल्प किया जाए, खुलूस और अज़्म के साथ, अपनी कोताही और बेबसी (विवशता) के अभाव के साथ ख़ुदा की क़ुदरत व रहमत के यकीन के साथ एक नये जीवन के आरम्भ करने का प्रयत्न करना चाहिए ये एक ऐसा जीवन होगा जिसमें पत्थर जैसे कठोर हृदय को मोम सा कोमल करने और विद्रोही व पापी मानव को खुदा का उपासक और आज्ञाकारी व मानवता के प्रति सहानुभूति में बदलने की योग्यता होगी इसके लिए फिर न किसी प्रचार की आवश्यकता होगी न एलान की,ये जीवन स्वयं अपनी सफलता और श्रेष्ठता का एलान होगा और धरती पर अल्लाह के पसन्दीदा (प्रिये) नियम का इज़हार (स्पष्टीकरण) होगा।

मनुष्य की आत्मा अभी मुर्दा नहीं हुई इस पर केवल ग़फ़लत और मादिदयत (दुन्या से प्रेम की भावना) के मोटे–मोटे परदे पड़ गये हैं और हमारी सुस्ती और कायरता के कारण ये परदे चाक नहीं हो पा रहे इसके अन्दर छिपा साफ पवित्र मुखड़ा संसार की दृष्टि से ओझल है।

मानव की प्रकृति वही है और खुदा का संदेश भी वही है, स्वार्थ इच्छा पूर्ति और सांसारिक प्रेम (दुन्या की महब्बत) की घटनाओं के कारण आज सारा संसार अंधकार में डूबता हुआ प्रतीत हो रहा है परन्तु मुसलमानों के पास अब भी वही प्रकाश है जो इस अंधकार को समाप्त कर सकता है ये प्रकाश खुदा और उसके भेजे हुए पैगम्बर सल्लललाहु अलैहि वसल्लम का है जिसने इतिहास के हर अंधकार में भटके हुए मानव के लिए प्रकाश का सामान किया और हिदायत व नजात के मार्ग को सरल किया–

मौलाना सैयद मुहम्मदुल हसनी रह०

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद अरशद नदवी

●●●

इस्लामिक फ़िक़्ह अकेडमी का

चौदहवा तीन दिवसीय फ़िक़्ही सेमिनार

इस्लामिक फ़िक़्ह अकेडमी का चौदहवां फ़िक़्ही सेमिनार २०,२१,२२ जून २००४ को दारुल उ़लूम सबीलुर्रशाद के इन्तिज़ाम में हैदराबाद में हुआ सेमिनार के लिए ख़ासतौर से दो मौज़ूअ़ (विषय) मुतअ़य्यन (नियुक्त) किये गये थे।

१. ग़ैर मुमालिक (विदेशों) में मुस्लिम अक़ल्लीयतें (अल्पसंख्यकों) के मसाइल (समस्याएं)

२. अम्ने आ़लम (विश्व शान्ति) और इस्लाम

इन मौज़ूआ़त (शीर्षकों) के अ़लावा, "जलाटीन" और इन्क़िलाबे माहियत (चीज़ों का पूरी तरह बदल जाना), "अल्कुहल" और "नये औक़ाफ़ के क़ियाम" पर भी बहसें हुईं।

सेमिनार में पूरे हिन्दोस्तान से दो सौ से ज़ियादा आ़लिम, क़ाज़ी, मुफ़्ता और इ़ल्म वाले लोग शरीक हुए थे कुवैत के आ़लिम डाक्टर ख़ालिद और डाक्टर अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार शरीफ़ ने भी शिरकत की, मक़ालात के साथ बहसों में भी भरपूर हिस्सा (भाग) लिया, सऊ़दी अ़रब के उस्ताद डाक्टर ख़ालिद मुस्फ़िर क़हतानी और ज़ाहिदान से मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर आ़रिफ़ी ने भी शिरकत की।

जनाब मौलाना सय्यिद मु० राबे ह़सनी नदवी सद्रे आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड की सदारत में सेमिनार शुरूअ़ हुआ पहले उ़लमाने मक़ाले (लेख) पेश किये बहसें हुईं और नीचे लिखी तजवीज़ें (प्रस्ताव)पास हुईं।

मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम तअ़ल्लुक़ात :

इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ लगभग ४० से अधिक मक़ालात पढ़े गये और जो तजवीजें मंजूर हुईं वह यह हैं।

१. इस्लाम का अपना एक मुस्तक़िल निज़ामे हुक्मरानी (स्थायी शासन व्यवस्था) है लेकिन मौजूदा आ़लमी ह़ालात (विश्व परिस्थिति) में मुस्लिम अक़ल्लीयत के लिए जमहूरी निज़ाम (लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था) ही प्रिय है। अतः इस निज़ाम के अन्तर्गत मुसलमानों का एलेक्शन में हिस्सा लेना, कन्डीडेट बनना, वोट देना और उम्मीदवार (कन्डी डेट) के लिए मुहिम (अभियान) चलाना जाइज़ है।

२. मुसलमानों के मिल्ली व मज़हबी फ़ाइदों का तक़ाज़ा (मांग) यह है कि वह वोट देने का क़ानून हक भर पूरे तरीक़े से इस्तिअ़माल (प्रयोग करें।)

३. जिन सियासी जमाअ़तों का मक़्सद (उद्देश्य) इस्लाम तथा मुसलमान दुशमनी हो उसमें शामिल होना या उनके कन्डीडेट को वोट देना जाइज़ नहीं।

४. जम्हूरी सियासी पार्टियों से मिल्ली मफ़ादात (लाभों) के तह्त मुआ़हदे (समझौते) किये जा सकते हैं।

५. मुल्क और इन्सानियत के नफ़ा और मुआ़शरे (समाज) में अ़द्ल व इन्साफ़ और अम्न व सलामती की फ़ज़ा क़ाइम करने के लिए गैर मुस्लिमों के साथ मिलकर काम किया जा सकता है। और उनके इश्तिराक (सहयोग) से तंज़ीमें (समितियां) बनाई जा सकती हैं।

६. मुसलमानों को ऐसी जगह रहना चाहिए जहां वह अपने दीन व ईमान और तशख़्ख़ुस (व्यक्तित्व) को बाकी रख सकें और तालीम व तर्बियत (शिक्षा, दीक्षा) का ऐसा बन्दोबस्त करना चाहिए जिससे अपने दीनी व मिल्ली तशख़्ख़ुस (व्यक्तित्व) की हिफाज़त (सुरक्षा) कर सकें।

७. इस्लाम में गैर मुस्लिम पड़ोसियों और तअ़ल्लुक वालों के हुकूक (अधिकार) भी हैं, इसलिए उनकी बीमारी व गम के मौकों पर उनकी अियादत व तअ़ज़ियत की जाए अर्थात बीमार को देखने जाएं और मौत हो जाने पर तसल्ली देने जाएं।

८. वन्दे मातृम जैसे गीत में शिर्किया अल्फाज़ हैं और हिन्दोस्तान की सरज़मीन को माबूद का दर्जा दिये जाने का तसव्वुर पाया जाता है इस लिए मुसलमानों के लिए इस गीत का पढ़ना शरीअ़त के हुक्म में हराम है लिहाजा इससे बचना अनिवार्य है।

९. अगर गैर इस्लामी कानूने शहादत या दूसरे कानूनों की बुन्याद पर किसी मुसलमान के हक में शरीअ़त के खिलाफ फैसला हो जाए तो उससे फाइदा उठाना जाइज नहीं है। यह सेमिनार तमाम मुसलमानों से अपील करता है कि वह अपने झगड़ों के मुकदमे दारुल कजा (शरअ़ी अदालत) ही में ले जाएं और वहा जो फैसला हो उसको कबूल करें और उसके मुताबिक अमल करे। यह इस लिए भी ज़रूरी है कि बाज मुकदमात में मुसलमान काज़ी का फैसला ही शरअ़न मुअ़तबर है। (शरीअ़त में मान्य है)

१०. वहदते अदयान (सब धर्म

एक हैं) का तसव्वुर (विचार) गैर इस्लामी है और किताब व सुन्नत के लिहाज़ से बातिल (मिथ्या) है। यह इस्लाम के तशख़्ख़ुस (व्यक्तित्व) को मिटाने की एक गहरी साज़िश (षडयंत्र) और मुसलमानों को बे राह करने की एक कोशिश है इस लिए मुसलमानों को ऐसे फ़ित्नों से बचना चाहिए।

११. इस्लाम इन्सानियत का एहतिराम (सम्मान) करता है । इसलिए मुसलमानों के लिए जहां तक हो सके इन्सानी हम्दर्दी की बुन्याद पर मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम मज़लूमों की मदद करना उन का दीनी व अख़्लाक़ी फ़रीज़ा है।

१२. मुसलमानों की तरफ़ से चलाए जाने वाले ख़िदमते ख़ल्क़ (जन सेवा) के इदारों जैसे अस्पताल वग़ैरह में मज़हब व मिल्लत के फ़र्क़ के बिना ख़िदमत व इआनत (सहायता) करना चाहिए।

अम्ने आलम और इस्लाम

अम्ने आलम पर भी मक़ालात पढ़े गये मुनाक़शात (तर्क वितर्क) के बाद नीचे लिखी तजावीज़ (प्रस्ताव) पास हुईं।

१. तशद्दुद (हिन्सा) का हर वह अमल जिस के ज़रीअे किसी फ़र्द या जमाअत (गुट) को किसी शरई वजह के बिना ख़ौफ़ व हिरास (भय) में मुब्तला किया जाए या उसकी जान माल और आब्रू, वतन दीन और अक़ीदे को ख़तरे से दो चार किया जाए यह दहशत गर्दी (आतंकवाद) है चाहे यह अमल (कार्य) किसी फ़र्द (व्यक्ति) की तरफ़ से हो या जमाअत (समुदाय) की तरफ़ से हो या हुकूमत की तरफ़ से।

२. किसी भी हुकूमत या रियासत की तरफ़ से ऐसी कार्यवाही करना जिससे किसी फ़र्द या जमाअत को उसके वाजबी हुक़ूक़ (अधिकारों) से महरूम (वंचित) किया जाए या उनको किसी तरह का नुक़्सान पहुंचाया जाए दहशत गर्दी (आतंकवाद) में दाख़िल है।

३. किसी भी तरह की ना इन्साफ़ी के ख़िलाफ़ मुनासिब और मुअस्सिर (प्रभावशाली) तरीक़े पर आवाज़ उठाना मज़लूम (पीड़ित) का एक हक़ है।

४. ज़ुल्म करने वालों का तअल्लुक़ जिस तब्क़े (वर्ग) और गिरोह से हो उसके बेक़ुसूर लोगों से ज़ुल्म का बदला लेना जाइज़ नहीं।

५. दहशत गर्दी के सद्देबाब (रोकने) की सूरत यह है कि तमाम लोगों को बराबर के हुक़ूक़ दिये जाएं और अद्ल व इन्साफ़ (न्याय) दिया जाए। इन्सानी हुक़ूक़ (अधिकारों) का पूरा सम्मान, जान व माल और आब्रू का मुकम्मल तहफ़्फ़ुज़ (पूर्ण सुरक्षा) किया जाए। नस्ली, क़बाइली, मज़हबी, लिसानी (भाषायी) इम्तियाज़ात (प्रमुखता) का लिहाज़ किये बिना तमाम इन्सानों को इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़अ दिया जाए।

६. किसी की जान व माल और आब्रू पर हम्ले की सूरत में उसको मुदाफ़अत (बचाव) करने का पूरा हक़ है।

जलाटीन :

इस मौज़ूअ (शीर्षक) पर जनाब डाक्टर असलम परवेज़ साहिब ने जदीद तहक़ीक़ात की रौशनी में एक अच्छा लेक्चर दिया जिस में जलाटीन की मालूमात दीं फिर उलमा हज़रात ने नीचे लिखी तजावीज़ (प्रस्ताव) पास कीं।

१. जलाटीन एक नाम्याती मुरक्कब, (मिश्रण) है। जो एक क़िस्म का प्रोटीन है। यह जानवरों की खाल और हड्डियों में पाए जाने वाले एक दूसरे तरह के प्रोटीन कोलाजिन से कीम्यायी तब्दीलियों के बाद बनाया जाता है, जो कीम्यायी और तबई (प्राकृतिक) तौर से कोलाजिन से बिल्कुल अलग एक नये किस्म के प्रोटीन की शक्ल इख़्तियार कर लेता है और अपनी रंगत, बू और ज़ाइक़ा (स्वाद) और ख़ासियत (प्रभाव) में भी कोलाजिन से मुख़्तलिफ़ (भिन्न) हो जाता है। शरीअत ने जिन चीज़ों को हराम बताया है अगर उनकी हक़ीक़त (वास्तविकता) और माहियत (मूलतत्व) बदल जाए तो उनके बारे में पहले वाला हुक्म बाक़ी नहीं रहता। एकेडमी के सामने माहिरीन के जरीअे जो तहक़ीक़ सामने आई है उसके मुताबिक़ जलाटीन में उन जानवरों की खालों और हड्डियों की हक़ीक़त बाक़ी नहीं रहती जिन के कोलाजीन से जलाटीन बनाया जाता है बल्कि वह एक नई चीज़ हो जाती है, इसलिये उसके इस्तिअमाल (प्रयोग) की गुंजाइश है।

३. फ़ुक़हा के इख़्तिलाफ़ और ग़िज़ाई अश्या (खाद्य पदार्थ) की अहम्मीयत और नज़ाकत को सामने रखते हुए सेमीनार, मुसलमान सनअतकारों (उद्योगियों) से अपील करता है कि वह हलाल जानवर और उसके पाक अज्जा (भागों) से जलाटीन तय्यार करें ताकि उसके हलाल व पाक होने में कोई शुबह न रहे।

अल्कुहल :

इस मौज़ूअ (शीर्षक) से मुतअल्लिक बाक़ाइदा सेमिनार तो पहले हो चुका है यहां यह मौज़ूअ ज़िमनन आया, चुनांचि अल्कुहल से मुतअल्लिक़ भी जनाब डाक्टर असलम परवेज़ साहिब ने एक अहम लेक्चर दिया जिसमें यह बताया कि अल्कुहल की बहुत सी

किस्में होती हैं। इन में नशा आवर सिर्फ़ इथाइल अल्कुहल होता है और उसका इस्तिअ़माल दवाओं में होता है। इतरियात में दूसरी क़िस्म का अल्कुहल होता है जिसमें नशा नहीं होता उसके बारे में एकेडमी ने यह तजावीज़ पास कीं :

१. अल्कुहल एक कीम्यावी माद्दा है जो मुख़तलिफ फलों और निशास्तों से बनाया जाता है। इस की बहुत सारी किस्में हैं जिन में एक किस्म नशा आवर है।

२. बाज़ दवाओं में ईथाइल अल्कुहल का इस्तिअ़माल होता है –

यह नशा आवर है। दवाओं में शामिल होने के बाद भी इसकी हक़ीक़त नहीं बदलती लेकिन इलाज व मुआलजे के बाब में शरीअ़त ने जो सुहूलत रवा रखी है उसके तहत मजबूरन अल्कुहल मिली हुई दवाओं का इस्तिअ़माल दुरुस्त है।

३. इतरियात में जो अल्कुहल इस्तिअ़माल होता है फ़न्नी माहिरीन की तहक़ीक़ व इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ वह नशा आवर नहीं है।

वक़्फ़ :

वक़्फ़ की अहम्मीयत व इफ़ादियत और उसकी क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ डाक्टर अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार शरीफ़ साहिब (कोयत) और दूसरे उ़लमा ने लेक्चर दिया। इस्लाम ने औक़ाफ़ के ज़रिये जो रिफाही तसव्वुर (विचार) दिया है वह किसी मज़हब में नहीं, क़दीम ज़मानों में दूसरे कामों के साथ औक़ाफ़ इस लिए काइम थे कि अगर किसी के ग़ुलाम से कोई बरतन टूट जाए और उसका मालिक मुआख़ज़ा करे तो वक़्फ़ की आमदनी ऐसे गुलामों के काम आए, मुसाफिरों के लिए, यतीमों के लिए और बेशुमार किस्मों के औक़ाफ़ का ज़िक्र फ़ुक़हा के यहां मिलता है। इस गुफ्तगू की रोशनी में यह तजवीज़ पेश की कि हिन्दुस्तान के माहौल में ख़ुसूसन जब कि दीनी मदारिस व मकातिब के लिए दाइरा तंग किया जा रहा है, एकेडमी मुसलमानों से अपील करती है कि औक़ाफ़ को ज़िन्दा करें और दीनी मदारिस और मकातिब के लिए भी वक़्फ़ करें।

(पृष्ठ १६ का शेष)

ने शहद की बहुत तअ़रीफ की जहां ख़ास तौर से इस इरशाद पर ग़ौर कीजिए – हज़रत अबू हुरैरः रज़िय-ल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया (उन पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो) जो शख़्स हर महीने सुब्ह के वक़्त तीन दिन शहद चाटे उसे कोई बड़ी तकलीफ़ नहीं पहुंचती है।

(मिश्कातुल मसाबीह, सुनने इब्ने माजह)

चुनांचि आधुनिक तिब्बी रिसर्च के अनुकूल यह बात सिद्ध हो चुकी है कि शहद अनगिनत रोगों की दवा है, इसमें विटामिन अ,ब,ज, विभिन्न मात्रा में मौजूद है, शहद शरीर को और फेफड़ा को शक्ति प्रदान करता है, शहद मुलैयिन है, पेट के वायु को समाप्त करता है, और दुर्गन्ध दूर करता है, दवाओं को स्वादिष्ट बनाता है और उनकी शक्ति को बहुत दिनों तक बाक़ी रखता है। खांसी दमा, ठन्डक के रोगों के लिए लाभदायक है। लक़वह और फ़ालिज का इलाज है, खून की सफ़ाई और दिल के रोगों के लिये उपयोगी है, आंखों के रोगों के लिए और निगाह को साफ़ रखने के लिए अति उपयोगी दवा है।

शहद की विशेषताएं

प्राचीन तिब और आधुनिक तिब दोनों शहद के लाभदायक और उपयोगी होने पर सहमत हैं। चिकित्सा की कोई पद्धिति ऐसी नहीं जिसमें शहद की अच्छाई मान्य न हो, शहद की विशेषताएं संक्षिप्त में निम्नलिखित हैं –

१. अन्तड़ियों को साफ़ करता है।

२. रुतूबात (नमी) को समाधान करता है क्योंकि शहद मुलय्यिन है।

३. बड़ी उ़म्र और बलग़मी मिज़ाज वालों के लिए बहुत ही लाभदायक है।

४. इसी तरह ठण्डे स्वभाव वालों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

५. मसाना, तिल्ली, जिगर, सीना और मेदा (आमाशय) को सेहत प्रदान करता है।

६. इससे पेशाब खुलकर आता है, बालों को लम्बा करता है।

७. आंखों में लगाने से निगाह तेज़ होती है, यदि आंख आई हुई है तो इसके इस्तेमाल से शिफ़ा मिलती है।

८. दांत साफ़ होते हैं, चमकते हैं, और मज़बूती हासिल करते हैं,

९. दवा के साथ बेहतरीन ग़िज़ा भी है और मशरूब (पेय) भी,

इन तमाम विशेषताओं के अतिरिक्त शहद की एक बड़ी अच्छाई है कि हर प्रकार के नुकसान से ख़ाली है। केवल शहद ही ऐसी चीज़ है जो तिब्बे इलाही और तिब्बे इन्सानी दोनों के अनुकूल जिस्म (शरीर) और रूह की ग़िज़ा है। इस आ़लम (संसार) में भी और आ़लमे आख़िरत (प्रलोक) में भी–(तिब्बे नबवी – इब्न क़ैय्यिम)

हिन्दी रूपान्तर – ग़ुफ़रान नदवी

●●●

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● इस्राईल एक ऐटमी शक्ति है ?

विशेषज्ञों के अंदाजे के अनुसार इस्राईल के पास इस समय मौजूद ऐटम बमों की संख्या सौ या दो सौ के बीच हो सकती है परन्तु इस्राईल ने इस विषय में कुछ कहने से हमेशा इनकार किया।

वास्तव में इस्राईल ने ऐटमी हथियार बनाने की अपनी कोशिश १९४८ में ही अपनी स्थापना के बाद शुरू कर दी थी और इस में उसे फ्रांस का सहयोग प्राप्त था इस को इस सरगर्मियों में इस्राईल के असल सहयोगी वह यहूदी वैज्ञानिक थे जो दुन्या भर से खिच कर डेमोना में स्थित उसकी खुफिया न्यूक्लियर निर्माण केन्द्र पहुंच रहे थे। लेकिन तमाम राज़दारी के बावजूद इस्राईल की ऐटमी सरगर्मियां छुपी नहीं रह सकीं। इस मामले में पहली और आखिरी बार चेतावनी अमरीकी राष्ट्रपति जान कनेडी ने ५ जुलाई १९६३ में दी थी। परन्तु इस के बाद अमरीका की खामोशी ने उसको प्रोत्साहित किया और अमरीका ने उस पर कोई रोक नहीं लगाई।

दूसरी तरफ मिस्री राष्ट्रपति जमाल अब्दुन्नासिर भी बराबर इस बात की घोषणा करते रहे थे कि उनका देश भी अन्ततः एक ऐटमी शक्ति बन कर रहेगा। जनरल नासिर को पूरा भरोसा था कि स्वेट यूनियन इस मामलों में उनकी पूरी सहायता करेगा। लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सका और मिस्र सहित मध्यपूर्व ऐशिया का कोई भी देश ऐटमिक शक्ति नहीं बन सका।

● २७०००० लोग इस्राईली से पलायन पर मजबूर–

इस्राईली जनगणना के अनुसार लगभग तीन लाख से अधिक लोग एक दहाई के अन्दर यहूदी राज्य इस्राईल से देश छोड़ने पर मजबूर हुए हैं जिन में से एक चौथाई संख्या उन लोगों की थी जो रूस से भाग कर यहां आए थे। अब वह यातो संयुक्त राज्य अमरीका चले गए या अपने पुराने देश सोवियत यूनियन वापस चले गये।

रिपोर्ट के अनुसार २६०००० यहूदी १९९० और २००१ के दर्मियान इस्राईल से बाहर गए जिन में लगभग ६८००० रूस से आये हुए यहूदी थे। इतनी ही अवधि में लगभग नौ लाख यहूदी इस्राईल में आकर बसे यह भी बताया गया है कि इस्राईल से देश त्याग करने वालों की उम्र २५ से ४० वर्ष के बीच है और यह कि रूस जाने वालों की संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है। जो २००० में ७१०० थी, २००१ में यह संख्या बढ कर ८१०० हो गयी।

यहूदी विश्लेषणकारों के अनुसार इस पलायन का कारण निम्नवत है –

१. विरोध आन्दोलनो के कारण यहूदी अपने को असुरक्षित समझते हैं।

२. इस्राईली सरकार इन लोगों के सुरक्षा देने मे असफल है।

३. नये शहरियों को राजनीतिक, सामाजिक और वर्गीय भेद भाव का सामना करना पड़ता है। कुछ लोगों का विचार है कि उन के साथ दूसरे दर्जे के शहरी का बरताव किया जाता है।

● मशीन जानेगी मन की बात!

इंसान के मन में क्या छिपा है इसका पता तो कई बार उसे खुद भी नहीं होता लेकिन अब वैज्ञानिकों का प्रयास है कि वे मशीन के जरिये मन के रहस्य पता लगा सकें।

इस स्वप्न को साकार करने के लिए शोधकर्ता ने बन्दर को कंप्यूटर के स्कीन के चारों ओर कर्सर के बारे में सोचने के लिए प्रशिक्षित किया है और अब इसके जरिये वे बंदर के मन की बातों का खुलासा कर सकेंगे। इस प्रयास के जरिये वैज्ञानिक बातचीत में असमर्थ लकवाग्रसित लोगों के विचारो को जानने के लिए भी कर सकते हैं। पिछले दो साल में शोधकर्ताओं ने ऐसी चिपों का विकास किया है जो मस्तिष्क के संकेतों को समझ लेती हैं और उनहें कार्य रूप में परिवर्तित कर देती हैं और इन उपकरणों से युक्त बंदरों को मानीटर पर कर्सर घुमाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस प्रकार के उपकरण शारीरिक गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले मस्तिष्कीय अंग मोटर कोर्टेक्स से मिलने वाले संकेतों का आसानी से अनुवाद कर सकते हैं। साइंस पत्रिका के मुताबिक पैसाडोना स्थित कैलीफोर्निया इंस्टीट्यूट आफ टेक्नॉलोजी के रिचर्ड एंडरसन और उनके सहायकों ने अब पैराइटल कोर्टेक्स नाम से एक दूसरे क्षेत्र जो हमारे कार्यों के संकेतों की योजना बनाने में मददगार होता है, के संकेतों का भी अनुवाद करने में सफलता पाती है।